प्रेरणा विचार

RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹: 30

मासिक

मई–2024 (पृष्ठ–36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

राष्ट्र के लिए करें मतदान

पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

♦ प्रेरणा विचार पत्रिका का आगामी जून माह में प्रकाशन का एक वर्ष पूर्ण हो रहा है। प्रथम वर्ष के अंकों पर आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारी भविष्य की योजनाओं के लिए महत्वपूर्ण होंगे।

♦ इसके साथ ही 7 जुलाई, 2024 (रविवार) को नोएडा स्थित प्रेरणा भवन में एक पाठक सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। इसमें आप सादर आमंत्रित हैं।

♦ हम आगामी माह में अपने सुधी पाठकों के साथ छोटे-छोटे समूहों में ऑनलाइन परिचर्चा के माध्यम से आपके सुझाव व विचार प्राप्त करेंगे।

पाठक सम्मेलन की जानकारी देने व आपकी प्रतिक्रिया एवं सुझाव प्राप्त करने के लिए हम समय-समय पर ई-मेल, व्हाट्सऐप संदेश और कॉल के माध्यम से आपके संपर्क में रहेंगे।

प्रेरणा विचार पत्रिका के जिन पाठकों की वार्षिक सदस्यता जून-जुलाई माह में समाप्त हो रही है। वे पाठक अपनी सदस्यता के नवीनीकरण हेतु निम्न फार्म को भर कर हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या व्हाट्सऐप नम्बर (9354133708) पर भेजें।

नाम..... मोबाइल नं. .....

डाक का पूरा पता.....

.....पिन कोड. .....

प्रेरणा विचार पत्रिका की सदस्यता लेने के लिए स्कैन करें

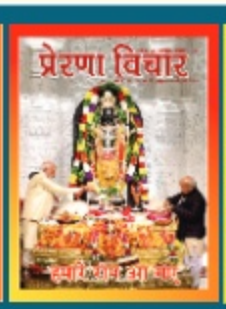

ऑनलाइन भुगतान के लिए लिए स्कैन करें

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या व्हाट्सऐप नम्बर (9354133708) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

@PRERNAVICHAR

+919354133708

प्रेरणा विचार

वर्ष -2, अंक - 5

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

समझदारी से राष्ट्रहित में करें मतदान -6

महिलाओं की गरिमा का उद्घोष - 8

राम मंदिर राष्ट्र की आत्मा का संरक्षण है -24

भोजशाला में सरस्वती मंदिर के सबूत -28

आरोप प्रत्यारोप में गायब होते जन सरोकार के मुद्दे....10

प्राचीन भारत में उन्नत धातुशास्त्र....11

स्टार्टअप व यूनिकॉर्न का नया भारत....12

विदेशी हस्तक्षेप को करारा जवाब....14

साक्षात्कार : गर्मियों में होने वाली बीमारियों से बचाव एवं उपचार....16

पर्यावरण संरक्षण के विचार को बढ़ा रहे....18

युद्ध के दौर में वरदान हैं बुद्ध की शिक्षाएं....19

बमबारी को बम-बम में बदल, बीमारू से डॉक्टर बनता उत्तर-प्रदेश....20

धर्म व संविधान एक दूसरे के पूरक....22

72 घंटे में मेरठ परिक्षेत्र अंग्रेजों से मुक्त....26

डाटा साइंस में स्वर्णिम अवसर....29

त्यौहारों, मेलों के साथ, गर्मी की शुरुआत....30

विशेष समाचार....32

क्या आप जानते हैं?....33

हर दिन पावन....34

संपादक के नाम पत्र

नागरिकता संशोधन अधिनियम जरूरी क्यों

किसी घर में अगर बंटवारा हो तो रहने वालों का ये कर्तव्य और अधिकार बनता है कि उनकी उन शिकायतों, दिक्कतों और हितों का ध्यान रखा जाए, जिसकी वजह से बंटवारा हुआ और प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। उसका निराकरण जरूरी है। बस यही है हमारा नागरिकता संशोधन कानून सुनिश्चित करता है उनकी सुरक्षा और नागरिकता। जो किसी न किसी रूप में उस विभाजन से प्रभावित हुए थे। और अत्याचार से पीड़ित थे। क्योंकि धार्मिक आधार विभाजन का मुख्य कारक था। सही मायने में यह देर से उठाया गया वह सकारात्मक कदम है जिसने उन शरणार्थियों के जख्म पर मरहम लगाने का कार्य किया है, जो वास्तव में उसके अधिकारी थे। ये वो लोग हैं जो चोरी छिपे किसी स्वार्थ के लिए देश में नहीं रहते हैं बल्कि अपने मन में भारतीयता के सद्भाव के चलते प्रेम से रहते हैं और हमसे भी सहयोग की अपेक्षा रखते हैं।

-डॉ. नीरज उपाध्याय

मुख्तार अंसारी की मौत पर राजनीति

मुख्तार अंसारी एक कुख्यात अपराधी था, जिसकी हाल ही में मृत्यु हुई है। उसने न जाने कितने घरों को वीरान कर दिया। उसका दबदबा इतना था कि उसके खिलाफ कोई गवाही देने को भी तैयार नहीं होता था। इस खतरनाक अपराधी को समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की सरकार में बहुत संरक्षण मिला। मुख्तार अंसारी पर पिछले डेढ़ वर्षों में कुल 8 आपराधिक मुकदमों में दो वर्ष से लेकर उम्रकैद तक की सजा हुई। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि एक खतरनाक डॉन की मृत्यु पर तमाम नेताओं ने दुख और हमदर्दी जताई। हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारे आदर्श मुख्तार अंसारी जैसे माफिया कभी नहीं हो सकते। हमारे आदर्श अपना पूरा जीवन देश को समर्पित करने वाले डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, वीर अब्दुल हमीद और क्रांतिकारी अशफाक उल्ला खान जैसी महान विभूतियां होनी चाहिए।

- मोक्षा त्यागी (छात्रा, आई. एम. एस. गाजियाबाद)

सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश बच्चों को आकर्षित करेगा

यह सराहनीय है कि प्रेरणा विचार पत्रिका पाठकों में भारत के स्व की प्रेरणा जागृत कर रही है। मेरे साथ ही परिवार के अन्य सदस्य भी पत्रिका को पढ़ते हैं। पत्रिका में बच्चों को प्रेरित करने वाली सांस्कृतिक एवं पौराणिक कहानियां, कविताएं, ज्ञान-विज्ञान की खोजें, बच्चों एवं युवाओं के पसंदीदा चरित्रों जैसे भीम, हनुमान, ध्रुव, कृष्ण, प्रह्लाद, अभिमन्यु, सीता, सावित्री आदि पर आधारित लेख, प्रश्नोत्तरी, पहेली का समावेश बच्चों को सहजता से सांस्कृतिक मूल्यों की ओर आकर्षित करेगा। **- डॉ. विमलेश कुमार राय**
कंप्यूटर विज्ञान विभाग, गौतम बुद्ध विवि., ग्रेटर नोएडा

क्यों आकर्षित करती है नकारात्मकता

कई प्रसिद्ध दार्शनिकों का कहना है कि नकारात्मकता, सकारात्मकता से अधिक आकर्षित करती है और आजकल की खबरों एवं सुर्खियों को पढ़कर कुछ ऐसा ही प्रतीत होता है। दार्शनिकों के विचार इसे बेहद महत्वपूर्ण बनाते हैं। नकारात्मकता की आकर्षण शीलता का एक मुख्य कारण है उसकी विवादास्पदता। लोगों की रुचि और ध्यान अक्सर असंतुष्टियों की ओर मुड़ जाता है। वे सोचते हैं कि कैसे एक व्यक्ति अपने नियमों का उल्लंघन करते हुए भी समाज में इतने महत्वपूर्ण रूप से उच्च स्थान पर पहुंच सकता है। इसके विपरीत, सकारात्मकता विचार का माध्यम बनती है। यह विचार किसी भी समस्या को समाधान की दिशा में ले जाता है। सकारात्मक विचारधारा विकास, समृद्धि, और सामाजिक समर्थन की दिशा में आत्म-प्रोत्साहन करती है।

-मानस वर्मा, छात्र

सशक्त एवं समृद्ध भारत के लिए मतदान

हर मतदाता को इस जिम्मेदारी का अहसास करना होगा कि मतदान में आलस्य न केवल वर्तमान अपितु भावी पीढ़ियों के लिए भी घातक सिद्ध हो सकता है। विभाजन के समय मतदान के आधार पर सियालकोट का पाकिस्तान में चले जाना ऐसा ही एक उदाहरण है। आइये हम सब विकसित भारत बनाने, इसकी एकता, अखंडता और बंधुत्व अक्षुण्ण रखने एवं लोकतंत्र मजबूत करने के चुनावी महायज्ञ में मतदान रूपी आहुति देने का संकल्प लें।

देश के 96 करोड़ लोगों द्वारा अट्ठारवीं लोकसभा के लिए 543 सदस्य चुनने का आम-चुनाव रूपी महायज्ञ जारी है। मत्स्य पुराण के अनुसार यज्ञ के लिए देवता, हवनीय द्रव्य, वेद मंत्र, ऋत्विक (पुजारी) और दक्षिणा सहित पांच चीजों का संयोग आवश्यक है। चुनावी यज्ञ में मतदाता अपने राष्ट्र देव को चुनाव आयोग रूपी ऋत्विक के मार्गदर्शन में जन गण मन और वंदे-मातरम रूपी मंत्रों के साथ वोट (मत) रूपी आहुति समर्पित कर अंगूठे पर चुनावी स्याही का प्रसाद ग्रहण करते हैं। दक्षिणा के रूप में मतदाता चुनाव-आयोग को संविधान प्रदत्त मताधिकार के प्रयोग हेतु श्रेष्ठ व्यवस्था के लिए आभार व्यक्त करते हैं। सामान्य यज्ञ जहां शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शांति, बल, बुद्धि, समृद्धि, सफलता और स्वास्थ्य आदि के लिए होते हैं, वहीं चुनावी यज्ञ का उद्देश्य मूलतः राष्ट्र की एकता, अखंडता और सार्वभौमिकता सुनिश्चित करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक तथा आर्थिक पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना होता है।

मतदान हमें अधिकार देता है आतंकवाद बनाम सुरक्षा, बमबारी बनाम बम-बम, विकृति बनाम संस्कृति, भ्रष्टाचार बनाम नैतिकता, विनाश बनाम विकास, घृणा बनाम समरसता, माफिया राज बनाम माफिया साफ, नागरिक समानता बनाम सांप्रदायिकता, पिछलग्गू भारत बनाम विश्वगुरु भारत के बीच चुनाव का। मतदाता तय करेगा कि देश में सामाजिक, आर्थिक नीतियां समावेशी होंगी या एकाकी। आज सर्वाधिक चर्चाओं में रहने वाले चुनावी मुद्दे हैं, देश के संसाधनों पर पहला हक किसका? अल्पसंख्यकों का अथवा गरीबों, किसानों, युवाओं, और महिलाओं का? राष्ट्रीयता को कमजोर करने की नीयत से समाज का जातियों में विभाजन, विघटन, संपत्ति का सर्वेक्षण, देश को दुनिया की तीसरी अर्थव्यवस्था बनाना, अंतरिक्ष में गगनयान भेजना, मदरसों का आधुनिकीकरण आदि।

इस बार के चुनावों में मुद्दों की भरमार होने के बाबजद भी 19 अप्रैल को 102 सीटों का लिए हुए मतदान में मतदाताओं का रुख अपेक्षाकृत उदासीन रहा। पहले चरण में बिहार में 47. 5 प्रतिशत, उत्तर-प्रदेश में 57.6 प्रतिशत, मध्य प्रदेश में 63.3 प्रतिशत, राजस्थान में 51 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 63.4 प्रतिशत, तमिलनाडु में 62.2 प्रतिशत मतदान ही हुआ। पहले चरण में सर्वाधिक 77.5 प्रतिशत मतदान पश्चिम बंगाल में हुआ? कारणों में जाए बिना बंगाल के मतदाता धन्यवाद के पात्र हैं और आशा है अगले चरणों के मतदाता इससे अवश्य प्रेरित होंगे। चुनाव आयोग के साथ ही सामाजिक संगठनों, स्कूलों, कॉलेजों आदि के प्रयासों के बावजूद भी मतदाताओं में उत्साह की कमी के कारण टटोलने होंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपील, स्कूल और कॉलेज में कैम्प लगाकर जागरूकता अभियान चलाने, छात्रों द्वारा माता-पिता को मतदान के लिए आग्रह करने जैसे अनेक प्रयासों से मतदान प्रतिशत बढ़ने की संभावना अवश्य है। हर मतदाता को इस जिम्मेदारी का अहसास करना होगा कि मतदान में आलस्य न केवल वर्तमान अपितु भावी पीढ़ियों के लिए भी घातक सिद्ध हो सकता है। विभाजन के समय मतदान के आधार पर सियालकोट का पाकिस्तान में चले जाना ऐसा ही एक उदाहरण है।

आइये हम सब विकसित भारत बनाने, इसकी एकता, अखंडता और बंधुत्व अक्षुण्ण रखने एवं लोकतंत्र मजबूत करने के चुनावी महायज्ञ में मतदान रूपी आहुति देने का संकल्प लें।

समझदारी से राष्ट्रहित में करें मतदान

प्रशांत त्रिपाठी
अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय
नई दिल्ली

चुनाव लोकतंत्र की आत्मा है, जो कि इसके संचालन के लिए अपरिहार्य है। विशेषकर, विकासशील राष्ट्र भारत के लिए मतदान का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसलिए हरेक मतदाता का यह कर्तव्य बनता है कि वह लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदान में हर हाल में भाग ले। लेकिन पूरी तरह से जागरूक होकर अच्छे प्रत्याशी को ही मतदान करें, जिससे बाद में पछताना न पड़े।

चुनाव लोकतंत्र का एक महान पर्व है। इसलिए देश का हर व्यक्ति जिसे भी मतदान करने का अधिकार मिला है उसे इस महान पर्व में जरूर हिस्सा लेना चाहिए। हम एक लोकतांत्रिक देश के स्वतंत्र नागरिक हैं, लोकतांत्रिक प्रणाली के तहत जितने भी अधिकार देश के नागरिकों को मिले हैं उनमें सबसे बड़ा अधिकार मतदान का है। तभी तो मतदान के माध्यम से हम स्वयं के साथ-साथ देश का भी भविष्य तय करते हैं। लेकिन आज भी जागरूकता के अभाव में लोग मतदान करने से कतराते हैं। मतदाता अपने अधिकार को समझें और लोकतंत्र की मजबूती के लिए अवश्य मतदान करें, क्योंकि मतदाता के योगदान से राष्ट्र की दिशा एवं दशा तय होती है। इसलिए मतदान के दिन अपने सभी कार्यों में सबसे ज्यादा महत्व मतदान को दें। यह एक ऐसा समय होता है जब नागरिकों को अपने प्रतिनिधियों का चयन करने का अधिकार होता है। चुनाव में जनता को विभिन्न राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों के बीच चुनने का मौका मिलता है। चुनावी महात्मा के रूप में विशेष आदर और महत्वपूर्णता होती है, जिसमें लोगों को राजनीतिक प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार मिलता है। यह लोकतंत्र की आधारशिला है और जिसके जरिये मतदाता राष्ट्र की नीतियों और दिशा को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चुनाव में मताधिकार का महत्व अत्यधिक है क्योंकि यह एक लोकतांत्रिक समाज में नागरिकों की प्रतिस्पर्धात्मक भागीदारी को बढ़ावा देता है। मताधिकार नागरिकों को उनके चुनावी निर्णयों का स्वतंत्रता से चयन करने का अधिकार देता है, जिससे वे अपने स्वार्थों और समाज के हित के आधार पर उम्मीदवारों को चुन सकते हैं। इसके अलावा नागरिक मताधिकार द्वारा सरकार को जवाबदेही पूर्ण बनाता है, क्योंकि वे अपने विकल्पों के माध्यम से सत्ताधारियों को उनके पांच साल के कार्यकाल का हिसाब देने का अधिकार रखते हैं।

वास्तव में चुनावों के बिना लोकतंत्र का कोई अर्थ नहीं है। चुनाव नागरिकों को अपनी राय व्यक्त करने और यह चुनने का एक समान रूप से प्रबंधित तरीका प्रदान करते हैं, साथ ही उनके और राष्ट्र के लिए कौन और क्या सर्वोत्तम है इसके साथ चलने का अवसर

भी। ऐसा नहीं है कि स्वतंत्र भारत में चुनाव कोई नई अवधारणा है। स्वतंत्रता के पहले भी चुनाव होते थे; बात सिर्फ इतनी है कि उस समय विकल्प और आवाजें बहुत सीमित थीं और मताधिकार निष्पक्ष नहीं होता था। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का चयन किया और सभी वयस्कों को समान वोट देने का अधिकार दिया। इस तरह के पहले चुनाव 1951–52 में मतदाताओं ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया।

लोकतंत्र में चुनाव का महत्व

किसी भी लोकतंत्र में चुनाव का महत्व निम्नलिखित आधार पर होता है-

नेतृत्व का चुनाव - चुनाव में भाग लेकर, प्रत्येक नागरिक राजनेता या राजनीतिक दल के पक्ष में वोट देकर अपना नेता चुन सकता है।

नेतृत्व परिवर्तन - चूंकि किसी भी लोकतंत्र में नागरिक ही सर्वोच्च प्राधिकारी होते हैं, यदि उन्हें मौजूदा सरकार के नियम पसंद नहीं हैं तो वे अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं। वे मताधिकार से राजनीतिक दल, उम्मीदवार और सरकार को बदल सकते हैं।

राजनीतिक भागीदारी - देश के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में, यदि किसी को लगता है कि कोई ऐसा मुद्दा है जिसे अधिकांश या सभी राजनीतिक दलों द्वारा संबोधित नहीं किया जा रहा है या उनके समाधान में कुछ संशोधन करने की आवश्यकता है, तो वे हमेशा उस चर्चा में भाग ले सकते हैं। सुधार लाने के लिए शासी निकायों को अपनी राय या स्वयं राजनीतिक दलों का गठन आदि के जरिये।

स्व-सुधारात्मक प्रणाली : भारतीय चुनाव प्रणाली में मौजूद नियमितता के कारण, यह राजनीतिक दलों के काम पर एक तरह की जांच के रूप में कार्य करता है, इस तथ्य को दोहराते हुए कि यदि पार्टी अपने काम में पर्याप्त कुशल नहीं है, तो वे गठित नहीं हो पाएंगे। इसलिए राजनीतिक दलों का जनता से वोट पाने के लिए अच्छा काम करना एक नियमित प्रदर्शन है।

निष्कर्ष रूप में, यह कहा जा सकता है कि चुनाव लोकतंत्र के आधार हैं। लोकतंत्र में, राजनीतिक दलों की स्वीकार्यता और नागरिकों को उनकी पसंद और राष्ट्र की समृद्धि के लिए के लिए चुनावों की आवश्यकता होती है। इस तरह चुनाव समाज और देश को प्रगतिशील बनाने के साथ लोगों को समानता का अधिकार भी प्रदान करता है। जिस समानता के बल पर लोग अपनी शक्तियों (मत) का प्रयोग करके अपने देश का भविष्य तय करते हैं। लोकतंत्र में चुनाव प्रक्रिया विभिन्न प्रतिनिधित्वों के बीच में से जनता को एक कर्मठ, सामाजिक हितों और राष्ट्र हित को महत्व देने वाला प्रतिनिधित्व के चयन का अधिकार प्रदान करती है। साथ लोकतंत्र में चुनाव राजनीतिक दलों को अनुशासित करने का कार्य भी। लोकतंत्र में चुनाव संविधान के सिद्धांतों अर्थात विश्वसनीयता, पारदर्शिता और अखंडता का पालन करता है। इस तरह चुनाव सरकार की तानाशाही पर पूर्ण रूप से अंकुश लगाकर एक बहुमत की सरकार का गठन भी करता है। जिससे सरकार जनता के प्रति जवाबदेह और उत्तरदायी रहती है।

यानि चुनाव लोकतांत्रिक देशों की आत्मा है, जो कि लोकतंत्र के संचालन के लिए अपरिहार्य है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में निर्वाचन आयोग लोकतंत्र की गरिमा और निष्ठा को बनाये रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विशेषकर, विकासशील देश भारत के लिए मतदान का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसी महत्व के मद्देनजर भारतीय चुनाव आयोग की तरफ से सौ फीसदी मतदान के लिए विशेष उपाय किए जा रहे हैं। जहां लोगों को मतदान के प्रति जागरूक किया जा रहा है, वहीं मतदान केंद्र पर भी उन्हें किसी तरह की कोई परेशानी न आए, इसके लिए प्रबंध किए जा रहे हैं। 80 साल से अधिक आयु के बुजुर्गों, दिव्यांग व्यक्तियों और कोरोना से पीड़ित मरीजों के लिए उनके घर पर बैलेट पेपर से मतदान के प्रबंध किए गए हैं। इसलिए हरेक मतदाता का यह कर्तव्य बनता है कि वह लोकतंत्र की मजबूती के लिए मतदान में हर हाल में भाग ले। लेकिन पूरी तरह से जागरूक होकर अच्छे प्रत्याशी को ही मतदान करें, जिससे बाद में पछताना न पड़े।

लोकतंत्र के समक्ष कुछ चुनौतियां

- राजनीति में अस्थिरता के कारण चुनाव के दौरान काले धन का समावेश होता है, जो अप्रत्यक्ष रूप से राजनीति के अपराधीकरण की संभावना को बढ़ाता है।
- चुनाव अभियान के दौरान विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा नफरत फैलाने वाले भाषण और मुफ्त उपहार देने का वादा करके 'आदर्श आचार संहिता' के महत्व का लगातार उल्लंघन किया जाता है। इस अनुचित व्यवहार पर रोक जरूरी है।
- भारत के चुनाव आयोग के पास राजनीतिक दलों को विनियमित करने की शक्तियों का अभाव है।
- चुनाव के दौरान ईवीएम की विश्वसनीयता पर लगातार सवाल।

महिलाओं की गरिमा का उद्घोष

डॉ ऋतु सारस्वत
प्रोफेसर, समाज शास्त्र

तमाम राजनीतिक विमर्शों और जीत-हार के आकलन से परे इस सत्य को स्वीकार करना ही चाहिए कि 2014 में 'डिग्निटी ऑफ विमेन' के उद्घोष ने बीते एक दशक में आधी आबादी के जीवन को सुगम और सुरक्षित कर महिला सशक्तीकरण की नई परिभाषा लिखी है।

लोकसभा चुनाव जारी है। सभी पार्टियां और उम्मीदवार अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए प्रचार-प्रसार के क्रम में अनेक घोषणाएं कर अपने विकास के मॉडल और सोच से वोटरों को लुभा रहे हैं। हालांकि जनता किसके वादे और इरादे पर विश्वास करती है और आने वाले 5 वर्षों के लिए शासन की बागडोर किसके हाथ में सौंपेगी, इसका उत्तर 4 जून को मालूम हो जाएगा। परंतु बीता दशक भारत को क्या देकर गया है, यह विश्लेषण भविष्य की पटकथा लिखने के लिए आवश्यक ही नहीं वांछित भी है। क्योंकि उसी में विश्वास की डोर निहित है। आईएमएफ के अनुसार भारत के वर्ष 2027 में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाने की प्रबल संभावना है और यह भी अनुमान लगाया गया है कि 5 वर्षों में वैश्विक विकास में भारत का योगदान 2 प्रतिशत बढ़ जाएगा। यह आंकड़े स्पष्ट इंगित कर रहे हैं कि भारत बड़ी ही सुदृढ़ता के साथ आर्थिक विकास की गति को थामे हुए है। एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि बीते एक दशक में ऐसा क्या हुआ कि आर्थिक विकास का प्रवाह तीव्र गति से बढ़ा है? क्योंकि अगर यह कहा जाता है कि इसके पीछे सरकार की आर्थिक नीतियां हैं, तो क्या 2014 से पूर्व आर्थिक विकास को गति देने के लिए रणनीतियां नहीं बनीं? यकीनन आजादी के बाद से निरंतर ऐसी अनेक योजनाएं व नीतियों का निर्माण हुआ जिससे भारत एक सुदृढ़ आर्थिक धरातल पर खड़ा हो सके। परंतु इसके बावजूद उन नीतियों के वह परिणाम प्राप्त नहीं हुए जो अपेक्षित थे। ऐसे में क्या उन कारणों को जानना आवश्यक नहीं हो जाता, जिसके चलते बीते एक दशक से पूर्व आर्थिक विकास की गति मंथर थी?

सर्वप्रथम तो हमें यह समझना होगा कि आर्थिक विकास स्वयं में स्वतंत्र चर नहीं है बल्कि इसके निर्धारण में अन्य अनवस्थित की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। दूसरा आर्थिक विकास तब तक अपनी अपेक्षित गति से नहीं बढ़ सकता जब तक उसमें आधी आबादी की भागीदारी न हो। और तीसरा बिंदु जो कि भारतीय अर्थव्यवस्था के परिप्रेक्ष्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और वह यह कि इसमें ग्रामीण भारत की

प्रतिभागिता हो, चूंकि भारत की लगभग 70 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या गांवों में निवास करती है। अतः उनकी प्राथमिकताएं और आवश्यकताएं जब तक आर्थिक विकास की रणनीति में केंद्रीय स्थान नहीं पातीं तब तक आत्मनिर्भर एवं सशक्त भारत की कल्पना करना व्यर्थ है। अब पुनः फिर वही प्रश्न उत्पन्न होता है कि आजादी के छः दशकों तक क्या ग्रामीण विकास तथा महिला कल्याण केंद्रित योजनाएं क्रियान्वित नहीं हुईं? निश्चित ही ऐसी योजनाएं बनी भी और महिला स्वावलंबन के लिए अनेक वित्तीय प्रावधान भी प्रस्तावित हुए, परंतु इन प्रयासों के बावजूद भी महिला सशक्तीकरण का प्रश्न अनसुलझा ही रहा। यह निर्विवाद सत्य है कि आर्थिक स्वावलंबन आधी आबादी के सशक्तीकरण की अपरिहार्य शर्त है और यह तभी संभव है जब महिलाओं के भीतर 'स्व' का भाव व्याप्त हो। आत्म सम्मान का अभाव अक्षमता और उदासीनता को जन्म देता है।

किसी भी व्यक्ति के भीतर आत्मसम्मान की अनुपस्थिति का सबसे बड़ा कारण स्वयं के जीवन को मूल्यहीन समझना है। इसमें किंचित भी संदेह नहीं कि दशकों से आधी आबादी को निरंतर यह बोध कराया गया है कि वो समाज का वह 'दायित्व' हैं जिनका सामाजिक और आर्थिक सशक्तीकरण में योगदान शून्य है। मूल्यहीनता के इस बोध ने आधी आबादी से गरिमामय जीवन को छीन लिया। उनकी पीड़ा, उनकी समस्याएं किसी के भी चिंतन-मनन का विषय नहीं बनी। अंधेरे में शौच के लिए सुरक्षित स्थान की खोज, ईंधन की जुगत में जंगलों में भटकना, पानी के लिए मीलों तक का सफर तय करना तथा स्वच्छता की परिभाषा और महत्व से अनभिज्ञ माहवारी के समय अपराधबोध ग्रसित जीवन व्यतीत करने की विवशताएं किसी भावनात्मक कथानक का लेखन नहीं, अपितु आधी आबादी के जीवन की वह कठोर सच्चाई थी जिसे नकारा नहीं जा सकता। जीवन की संघर्षशील चेष्टा के बीच स्वावलंबन उनके लिए कोरी कल्पना से अधिक कुछ भी नहीं था। परंतु दशकों से चली आ रही पीड़ाओं को 15 अगस्त 2014 को प्रधानमंत्री के उच्चारित शब्दों ने भेद दिया 'क्या कभी हमारे मन को पीड़ा हुई है कि आज भी हमारी माता और बहनों को खुले में शौच के लिए जाना पड़ता है। डिग्निटी ऑफ वीमेन, क्या यह हम सब का दायित्व नहीं..' यह आवाहन विशुद्ध रूप से गैर-राजनीतिक था। 'डिग्निटी ऑफ विमेन' इन शब्दों ने आधी आबादी की दशा और दिशा बदल दी। 'एक्सेस टू टॉयलेट्स एंड द सेफ्टी कन्वीनियंस एंड सेल्फ

आधी आबादी को स्वयं ही नीर क्षीर विवेक के जरिए अपनी गरिमा के लिए सकारात्मक दिशा में बढ़े हुए कदम को और गति देकर इस संकल्प को सिद्धि में बदलना ही होगा।

रिस्पेक्ट ऑफ विमेन इन इंडिया' की रिपोर्ट ने खुलासा किया कि खुले में शौच से मुक्ति ने महिलाओं के भीतर अदम्य आत्मविश्वास जागृत किया है। गरिमामय जीवन के अध्याय में एक नवीन पृष्ठ तब जुड़ा जब 'उज्ज्वला योजना' क्रियान्वित हुई। इस योजना ने महिलाओं के घंटों के उस परिश्रम पर विराम लगा दिया जो कि जलाऊ ईंधन की खोज में व्यय होते थे। यह योजना जीवन रक्षक भी सिद्ध हुई। उल्लेखनीय है कि बीते वर्ष हुए एक शोध के मुताबिक विश्व भर में ईंधन के रूप में इस्तेमाल करने से निकलने वाला धुआं सालाना करीब 37 लाख लोगों की जान ले रहा है। अगस्त 2019 महिलाओं के गरिमामय जीवन के लिए मील का पत्थर साबित हुआ, जब 'हर घर नल से जल योजना' आरंभ हुई। शोध बताते हैं कि ग्रामीण महिलाएं पानी इकट्ठा करने के लिए एक दिन में 10 मील तक पैदल चलती थीं। पानी लाने के लिए घंटों का सफर तय करना महिलाओं को आय अर्जित करने वाले व्यवसायों में संलग्न करने में सबसे बड़ी बाधा थी। परंतु 2019 से 2024 तक आते आते तस्वीर बदल गई। योजना आरंभ होने से पूर्व ग्रामीण क्षेत्र के 16.79 प्रतिशत घरों में नल थे जो कि 2024 में बढ़कर 75.18 प्रतिशत हो गए। स्वच्छ जल तक पहुंच में निवेश, महिलाओं और लड़कियों के सशक्तीकरण में प्रत्यक्ष निवेश है। यह महिलाओं को उनके समुदाय में नेतृत्व के अवसर और प्रतिनिधित्व प्रदान करता है। स्वच्छता, जल की सहज उपलब्धता और ईंधन ने आधी आबादी को 'पूर्ण शक्ति' प्रदान की, क्योंकि इन योजनाओं ने शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक सशक्तता का मार्ग प्रशस्त किया। साथ ही उनके उत्पादक समय को जो कि पूर्व में निरर्थक व्यय होता था 'आर्थिक स्वावलंबन' की ओर प्रवृत्त किया।

जैविक कृषि, पशुपालन तथा हथकरघा उद्योग में ग्रामीण महिलाएं संलग्न होकर आत्मनिर्भर भारत की सबसे मजबूत कड़ी के रूप में उभरीं। तमाम राजनीतिक विमर्शों और जीत-हार के आकलन से परे इस सत्य को स्वीकार करना ही चाहिए कि 2014 में 'डिग्निटी ऑफ विमेन' (महिलाओं की गरिमा) के उद्घोष ने बीते एक दशक में आधी आबादी के जीवन को सुगम और सुरक्षित कर महिला सशक्तीकरण की नई परिभाषा लिखी है, जिसने न केवल वर्तमान में अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण में अपनी महती भूमिका निभाई है वरन भविष्य भी उनके आत्मबल का साक्षी बनेगा। इसलिए आधी आबादी को स्वयं ही नीर क्षीर विवेक के जरिए अपनी गरिमा के लिए सकारात्मक दिशा में बढ़े हुए कदम को और गति देकर इस संकल्प को सिद्धि में बदलना ही होगा। ■

आरोप प्रत्यारोप में गायब होते जन सरोकार के मुद्दे

देवेन्द्र सिंह गौतम
शोधार्थी, दिल्ली विश्वविद्यालय

18वीं लोकसभा का चुनाव का जारी है। किंतु जन आधार के मुद्दे जो लोकहित से जुड़े हैं उन पर चर्चा करने के बजाए विपक्ष तुष्टीकरण के भंवर में फंसकर ऐसे मुद्दों को उठाकर खुश है जो मुद्दे राष्ट्र के स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव को नुकसान पहुंचाते हैं। सरकार से सैन्य कार्रवाई के प्रमाण मांगना, 22 जनवरी को अयोध्या में संपन्न हुए श्रीरामलला के प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम को भाजपा का कार्यक्रम बताना व नवरात्रि जैसे पावन समय में विपक्ष के नेता द्वारा मांस खाते हुए वीडियो शेयर कर संपूर्ण हिंदू समाज को चिढ़ाने का कार्य करना। वर्तमान भारत का राजनीतिक विपक्ष सरकार का विरोध करते-करते राष्ट्र के गौरव के विरुद्ध बयानबाजी करने लगता है। कांग्रेस व उसके सहयोगी दलों का यह रवैया उनकी राजनीति को तो नेपथ्य में ले ही जा रहा है, साथ ही साथ संसदीय लोकतंत्र में प्रभावी विपक्ष की भूमिका का भी उपहास है।

जन सरोकार के मुद्दे जैसे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व शिक्षा व्यवस्था में पारदर्शिता, स्वास्थ्य की सुलभता व स्वास्थ्य योजनाओं का पारदर्शी निष्पादन, रोजगार सृजनता व कृषिगत समस्याएं इन मुद्दों पर विपक्ष को राजनीतिक पिच तैयार करके इन योजनाओं के निष्पादन में जो खामियां रह गईं उन खामियों को लोकहित में जनता को अवगत कराना व सरकार पर इन खामियों को दूर करने के लिए दबाव बनाना जिससे अधिकाधिक जनता का लाभ हो व योजनाओं का लोकहित में निष्पादन हो। बीते दिनों कुछ राज्यों में पेपर लीक का मुद्दा है जिसमें बिहार में तत्कालीन महागठबंधन सरकार की निष्क्रियता के कारण बिहार के लाखों विद्यार्थियों को पेपर लीक के कारण परेशानी का सामना करना पड़ा, राजस्थान में गहलोत सरकार के समय भी इस प्रकार की घटनाएं प्रकाश में आईं। इसी क्रम में केंद्र सरकार की आयुष्मान भारत योजना जिसमें वार्षिक पांच लाख रुपये का हेल्थ कवर देकर मोदी सरकार ने जहां भारत की अधिकांश आबादी को गंभीर बीमारियों के निजात दिलाने में मदद की। वहीं कुछ विपक्षी दल इस कल्याणकारी योजना पर भी राजनीति कर रहे हैं।

लोक से संबंधित विषयों पर चर्चा करना व उनके निस्तारण के लिए कार्य करना ही राजनीतिक दलों का धर्म होना चाहिए, जिसमें विपक्ष की भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। वर्तमान में विपक्ष जातिवाद व परिवारवाद के बादलों में ढका है जिसका चिंतन इस बात पर है कि सत्ता के हस्तांतरण में मेरे राजनीतिक दल में मेरे वंश परंपरा के अलावा किसी दूसरे को अवसर न मिले। विपक्ष के अधिकांश दल इसी रणनीति में व्यस्त हैं।

इसलिए राजनीतिक दलों का उद्देश्य मात्र सत्ता प्राप्ति तक न सीमित हो, सत्ता प्राप्त करना साधन हो, जबकि सरकारों का उद्देश्य राष्ट्र का सर्वांगीण उत्थान करना होना चाहिए। जिसमें जम्मू कश्मीर, अरुणाचल, गुजरात व केरल के विकास में समता का भाव हो, सभी भाषाओं का बराबर सम्मान हो, लोक कला व संस्कृति को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय पटल पर अवसर प्रदान करना हो। वर्तमान मोदी सरकार इन विषयों पर तत्पर रही है। चाहे वह अनुच्छेद 370 समाप्त कर जम्मू कश्मीर व लद्दाख में शांति स्थापित करना व रोजगार के अवसर प्रदान करना। 1528 में बाबर के सिपहसालार मीर बांकी ने अयोध्या में स्थापित लोक आस्था के केंद्र बिंदु भगवान श्रीराम के मंदिर को तोड़कर बाबरी ढांचा खड़ा किया था, लगभग पांच सौ वर्षों तक यह ढांचा भारतीय गौरवशाली अतीत के माथे पर कलंक की तरह था। सुप्रीम कोर्ट के निर्णय व मोदी सरकार के प्रयासों से श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट निगरानी में भव्य रामलला के मंदिर का निर्माण हुआ और 22 जनवरी 2024 संपूर्ण भारत वर्ष व दुनिया में जहां जहां हिंदू परंपरा को मानने वाले लोग हैं, उन्होंने इस दिन युग दीपावली के रूप में मनाकर अपने आराध्य का स्वागत किया।

भारत के स्वाभिमान व गौरव से जुड़े विषयों पर कांग्रेस व उसके सहयोगी दलों की अलग व बेतुकी राय ने भारत में इन राजनीतिक दलों को अप्रासंगिक बना दिया इसके लिए शायद यही दल जिम्मेदार हैं। लोकतंत्र में शासन तो सरकार चला रही है लेकिन शासन जनता का है अर्थात् सरकार जनता के प्रतिनिधि के रूप में सत्ता का संचालन कर रही है। जब देश में व्यवस्था लोकतांत्रिक हो तो लोक से संबंधित विषयों पर चर्चा करना व उनके निस्तारण के लिए कार्य करना ही राजनीतिक दलों का धर्म होना चाहिए, जिसमें विपक्ष की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण है। वर्तमान में विपक्ष जातिवाद व परिवारवाद के बादलों में ढका है जिसका चिंतन इस बात पर है कि सत्ता के हस्तांतरण में मेरे राजनीतिक दल में मेरे वंश परंपरा के अलावा किसी दूसरे को अवसर न मिले। विपक्ष के अधिकांश दल इसी रणनीति में व्यस्त हैं। भला इन राजनीतिक दलों से भारत की जनता जन सरोकार के मुद्दों पर क्या अपेक्षा रखेगी। ■

प्राचीन भारत में उन्नत धातुशास्त्र

रूबी मिश्रा
रसायन विभाग, देशबंधु महाविद्यालय, नई दिल्ली

ईसा पूर्व लगभग 4 हजार वर्ष पहले से ही भारत में परिष्कृत विभिन्न धातुओं के अनेक प्रमाण सहज ही उपलब्ध हैं। दर्जनों प्राचीन ऐतिहासिक स्थलों की खुदाई में प्राप्त लोहा, तांबा, चांदी, कांसा, टिन, सीसा इत्यादि धातुओं की शुद्धता 95 फीसदी से भी अधिक मिली है। यानी प्राचीन भारत में धातु विज्ञान अत्याधिक उन्नत अवस्था में था। वेद, उपनिषद, संहिता, पुराण, रामायण, महाभारत समेत सैकड़ों ग्रन्थ और सिन्धु सभ्यता की खुदाई में निकली वस्तुएं एवं दिल्ली का लौह स्तंभ इस बात के प्रत्यक्ष प्रमाण भी हैं।

अश्मा च मे मृत्तिका च मे गिरयश् च मे पर्वताश् च मे सिकताश् च मे वनस्पतयश् च मे हिरण्यं च मे ऽयश् च मे श्यामं च मे लोहं च मे सीसं च मे त्रपु च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।
(कृ.यजुर्वेद)

भारत में जहां-जहां भी प्राचीन सभ्यता के प्रमाण मिले हैं जैसे कि जावर, राजपुरा दरीबा, खेतड़ी, रामपुरा, अगुचा, चंबा, चित्रादुर्गा आदि स्थल में प्राप्त लोहा, तांबा, चांदी, जस्ता इत्यादि धातुओं की शुद्धता 95 से लेकर 99 प्रतिशत तक है। आज से लगभग साढ़े चार हजार वर्ष पहले इन धातुओं का शुद्ध स्वरूप, परिष्कृत करने की तकनीक भारतीयों के पास कहां से आई? इसका अर्थ यही है की प्राचीन काल से ही भारत में धातुओं के बारे में जानकारी ही नहीं बल्कि उन्हें शुद्ध करने की प्रक्रिया भी उपलब्ध थी। वाग्भट्ट द्वारा लिखित 'रसरत्नसमुच्चय' ग्रंथ में धातु कर्म हेतु लगने वाली भिन्न-भिन्न भट्ठियों का वर्णन किया गया है। महागजपुट, गजपुट, वराहपुट, कुक्कुटपुट और कपोतपुट जैसी भट्ठियों का वर्णन इसमें है। इन भट्ठियों में डाले जाने वाले गोबर के कंडों की संख्या एवं उसी अनुपात में निर्मित होने वाले तापमान का उल्लेख भी आता है। उदाहरणार्थ, महागजपुट भट्ठी के लिए गोबर के 2000 कंडे लगते थे, जबकि कम तापमान पर चलने वाली कपोतपुट भट्ठी के लिए केवल आठ कंडों की आवश्यकता होती थी।

आज के आधुनिक फर्नेस वाले जमाने में गोबर पर आधारित भट्ठियां अत्यधिक पुरानी तकनीक एवं आउटडेटेड कल्पना लगेंगी। परन्तु ऐसी ही भट्ठियों के माध्यम से बने उस कालखंड के लौहस्तंभ जैसी अनेक अदभुत वस्तुएं तैयार की गईं, जो आज के आधुनिक वैज्ञानिक भी निर्मित नहीं कर पाए हैं।

यूरोपीय देशों को सन् 1740 तक जस्ता नामक धातु के उत्पादन एवं निर्माण की प्रक्रिया की जानकारी नहीं थी। परंतु भारतीयों ने जस्ता निर्माण की प्रक्रिया में प्रवीणता एवं कुशलता बहुत पहले हासिल कर ली थी। ईसा पू. छठी शताब्दी में भी जावर की खदान कार्यरत थी। प्रसिद्ध ग्रंथ रस रत्नाकर लिखने वाले नागार्जुन जिन्हें (फादर ऑफ कैमिस्ट्री) भी कहा जाता है। उन्होंने जस्ता बनाने की विधि को विकसित एवं विस्तृत स्वरूप में लिखा है। इसी ग्रंथ में डिस्टिलेशन (आसवन), लिक्विफिकेशन (द्रवण) इत्यादि विधियों का उल्लेख किया गया है।

यह भी कहा जा सकता है कि भारत के धातु शास्त्र का विश्व के औद्योगिकरण में एक महत्वपूर्ण हिस्सा है और सन् 1000 के काल-खंड के आसपास भारत एक बड़े स्तर पर विभिन्न धातुओं के निर्यात का केंद्र था। विशेषकर जस्ता और हाई कार्बन स्टील की तकनीक विश्व को भारत के रसायन विज्ञान ने ही दिया है। यथा दिल्ली का लौह स्तम्भ प्राचीन भारतीय धातुओं से संबंधित ज्ञान और वैज्ञानिकों की श्रेष्ठता का गौरवशाली स्मारक है। धातु शास्त्र के वर्तमान विद्यार्थी प्राचीन उन्नत और वैज्ञानिक ज्ञान से सीखकर नये रूप में उसे क्रियान्वित करें, तो भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प में इस प्राचीन प्रौद्योगिकी से ध्येय स्वतः ही पूर्ण हो जाएगा। क्योंकि प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान बहुत उन्नत अवस्था में था। तत्कालीन भारतीय धातु वैज्ञानिक अत्यंत कुशल शिल्पी थे और उन्हें विभिन्न धातुओं के धातुकर्म (धातुशोधन) की जानकारी थी। उन्होंने तांबे और टिन को मिलाकर कांसा भी बनाया था। इस तरह ईसा पश्चात पहली शताब्दी तक लोहा, तांबा सोना चांदी, जैसी धातुओं और पीतल, कांसा जैसी मिश्र धातुओं का भी व्यापक स्तर पर उत्पादन होने लगा था। ■

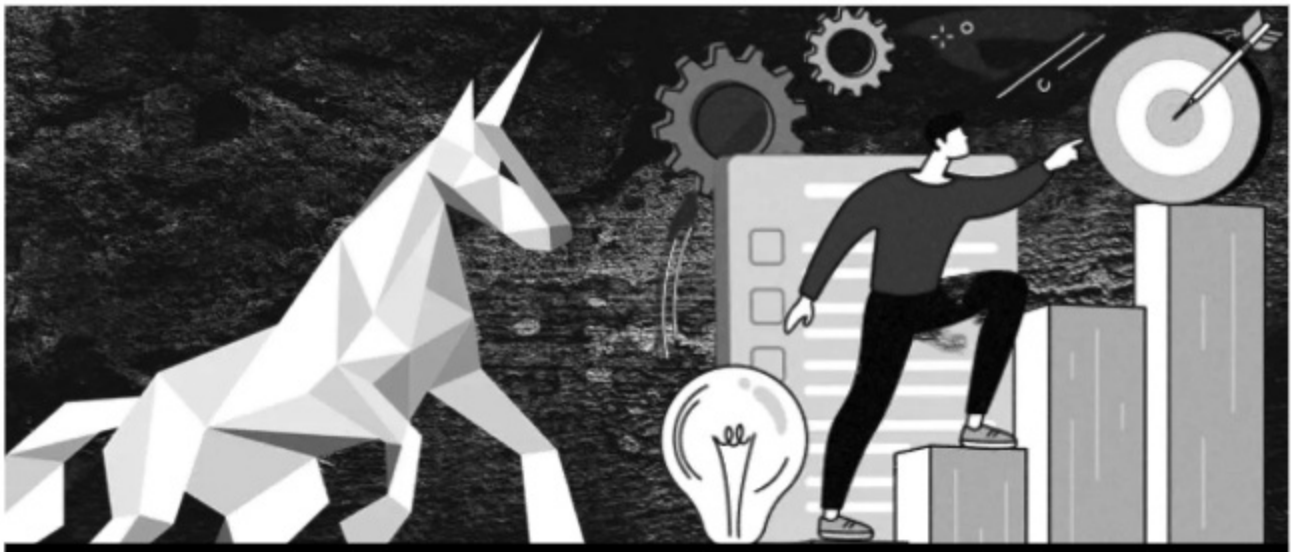

स्टार्टअप व यूनिकॉर्न का नया भारत

शिवेश प्रताप
लेखक एवं स्तंभकार

नये भारत के लिए सबसे महत्वपूर्ण बिंदु की चर्चा करना आवश्यक है जिसने भारत की स्टार्टअप क्षेत्र की वास्तविक ऊर्जा को विश्व के सामने रखने में सबसे अधिक योगदान दिया है। जी हां, यह है सरकार के द्वारा उपलब्ध कराए गए सही इकोसिस्टम एवं सहयोग की दृढ़ इच्छाशक्ति।

बीते हुए तीन-चार वर्ष भारत के लिए स्टार्टअप्स एवं यूनिकॉर्न की दिशा में ऐतिहासिक एवं स्वर्णिम रहे। जिस तरह से भारत ने इस क्षेत्र में अपनी धाक जमाते हुए दुनिया भर के देशों को हैरत में डाला है वह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि सरकार द्वारा उठाए जा रहे सुधारवादी कार्यक्रमों एवं बदले हुए वातावरण में 'ईज आफ डूइंग बिजनेस' का प्रभाव किस प्रकार से प्रतिफलित हो रहा है। 2021 में भारत के यूनिकॉर्न लिस्ट में कई कंपनियां दर्ज हुईं जैसे देश का पहला सोशल कॉमर्स यूनिकॉर्न मीशो, पहला ई-फार्मेसी यूनिकॉर्न फार्मईजी, पहला स्वास्थ्य क्षेत्र का यूनिकॉर्न इनोवाकर सफलतापूर्वक दर्ज हुए। 2021 में कुल 33 भारतीय स्टार्टअप्स यूनिकॉर्न की श्रेणी में दर्ज हो गए। 2022 में इससे भी अधिक तेजी से यूनिकॉर्न बनते हुए स्टार्टअप्स को देखा जा रहा है। 2021 में भारत ने हर महीने 3 सफल नए यूनिकॉर्न पैदा किए। यह अपने आप में एक अभूतपूर्व कीर्तिमान है। एक रिसर्च संस्था की रिपोर्ट अनुसार 2022 में भारत 54 यूनिकॉर्न देने के साथ संसार का तीसरा सबसे बड़ा यूनीकॉर्न वाला देश हो गया है। भारत ने यूनाइटेड किंगडम, जर्मनी, फ्रांस, इजरायल, कनाडा, ब्राजील एवं साउथ कोरिया जैसे दिग्गज देशों को पछाड़कर इस स्थान पर पहुंचा है।

इस लिस्ट में पहले नंबर पर संयुक्त राज्य अमेरिका एवं दूसरे स्थान पर चीन बना हुआ है। आज भारत के सबसे अधिक यूनिकॉर्न्स पूरे विश्व भर में फैले हुए हैं। इन सभी में 94 भारत में मौजूद हैं तथा 65 भारत के बाहर स्थित हैं। यूनिकॉर्न के क्षेत्र में यदि भारतवंशियों के प्रभाव की बात करें, तो यह डाटा और अधिक प्रभावशाली हो जाता है। अमेरिका का डिलीवरी यूनिकॉर्न इंस्टाकार्ट, मेक्सिको का फिनटेक यूनिकॉर्न क्लिप, यूनाइटेड किंगडम का गेमिंग यूनिकॉर्न इंप्रोबेबल, सिंगापुर का ईकॉमर्स यूनिकॉर्न मोग्लिक्स हो या जर्मनी का ईकॉमर्स यूनिकॉर्न ओमियो हो यह सब के सब किसी भारतीय के द्वारा ही को-फाउंड किए गए हैं। यदि बाजार मूल्य के आधार पर बात करें तो, भारत के 94 यूनिकॉर्न का कुल बाजार मूल्य 320 मिलियन अमेरिकी डॉलर है। नायका, फ्लिपकार्ट, जोमैटो, पेटीएम, ओला, भारतपे जैसे कितने ही यूनिकॉर्न हैं, जिन्होंने आज भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम को पूरी तरह से बदल कर रख दिया है। इसी तरह डिजिटल मार्केटिंग में मात्र 6 महीने पहले प्रारंभ हुई कंपनी मेनसा यूनिकॉर्न बन गई।

क्रिप्टो करेंसी ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म कॉइन स्विच कुबेर भी थोड़े समय में यूनिकॉर्न बन गया।

आइए इस बात की पड़ताल करते हैं कि क्या भारत में यूनिकॉर्न बनना अन्य देशों की अपेक्षा आसान है? यदि हां तो इनके क्या कारण हैं। प्रतिष्ठित संस्थान नासकॉम के द्वारा 2022 में जारी एक रिपोर्ट के अनुसार अप्रैल-जून, 22 की तिमाही में 6.5 बिलियन डॉलर निवेशकों द्वारा निवेश किया गया। 75 प्रतिशत यूनिकॉर्न कंपनियां पिछले 11 सालों में निर्मित हुई हैं। उनमें से 50 फीसदी अधिक कंपनियां 2017 के बाद बनी हैं। इन सभी यूनिकॉर्न में निवेश होने वाला 60 प्रतिशत पैसा केवल 3 सेक्टरों में लगा है, ईकॉमर्स, सॉफ्टवेयर सेवा, एवं फिनटेक। इसके बाद एजुकेशन टेक्नोलॉजी एवं लॉजिस्टिक्स सेक्टर में भी कुछ निवेश हुआ है।

लगभग 33 फीसदी भारतीय स्टार्टअप्स का हेड ऑफिस बेंगलुरु में तथा 20 प्रतिशत का ऑफिस राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में है। अब समझते हैं कि नए स्टार्टअप्स का मूल्य 1 बिलियन डॉलर इतने कम समय में कैसे हो रहा है? जिस कारण से यह तेजी से यूनिकॉर्न बन जाते हैं। जोहो तथा मेकमायट्रिप ऐसी कंपनियां हैं जिन्हें 10 वर्ष से अधिक समय लगा दिया यूनिकॉर्न बनने में। एटीएम की स्वाइप मशीनें बनाने वाली कंपनी पाइन लैब्स 22 वर्षों में एक यूनिकॉर्न कंपनी बन पाई। इसके कारण हैं वेंचर कैपिटलिस्ट एवं एंजल इन्वेस्टर्स। वेंचर कैपिटल लिस्ट वह कंपनियां होती हैं, जो किसी स्टार्टअप में निवेश करके उसने एक हिस्सेदारी हासिल कर लेती है तथा भविष्य में स्टार्टअप के द्वारा होने वाले किसी भी लाभ एवं हानि में इस वेंचर केपिट लिस्ट का लाभ एवं हानि जुड़ा हुआ होता है। एंजल इन्वेस्टर्स कोई इंडिविजुअल होते हैं जो किसी स्टार्ट में पैसा निवेश करते हैं। ग्रैंट थॉर्नटन एवं एसोचैम एक रिपोर्ट के अनुसार 2010 तक भारत में वेंचर कैपिटल का निवेश मात्र 13 मिलियन था जो 2014–15 में बढ़कर 1.8 बिलियन डॉलर हो चुका था। इस आंकड़े से हम भारत में हो रहे निवेश के भीतर एक सकारात्मक बदलाव को देख सकते हैं। दूसरा कारण है स्टार्टअप की सेवाओं या प्रोडक्ट के द्वारा होने वाला मुनाफा।

भारतीय स्टार्टअप्स में निवेश : भारत में आज 3 से 4 साल पुरानी कंपनियां भी एक बिलियन डॉलर का निवेश खींच पाने में सफल होती हैं। इसका सबसे प्रमुख कारण है आबादी एवं उसी के अनुरूप एक बड़ा बाजार जहां एक बहुत बड़ा मध्यमवर्ग सेवा भोगी के रूप में तैयार हो रहा है। विश्व बैंक एवं भारत सरकार की MOSPI रिपोर्ट अनुसार भारत में 50 करोड़ से अधिक जनसंख्या ऐसे लोगों की है जो 1981 से 2012 के बीच पैदा हुए हैं एवं यह जनसंख्या सुविधाओं पर खर्च करते हुए अपने पैसों को बैंकों के फिक्स्ड डिपॉजिट से निकालकर नए-नए तरीकों से निवेश कर अधिक लाभ कमाना चाहती है।

मॉर्गन स्टैंनली की 2017 की एक रिपोर्ट के अनुसार 2020 तक भारत की यह नई पीढ़ी (1981 से 2012 के बीच पैदा हुए) 330 बिलियन डॉलर प्रतिवर्ष खर्च करेगी। भारत अब वैश्विक उपभोक्तावाद में शामिल हो चुका है। यह खर्च कई विकसित देशों में होने वाले खर्च से कम है परंतु भारत एक विकासशील बाजार है इसलिए भविष्य में यह खर्च भी बढ़ेगा। भारत के कई ऐसे व्यापारिक क्षेत्र हैं जिसे अभी तक डिजिटल टेक्नोलॉजी ने नहीं छुआ है ऐसे में यदि इन सेक्टरों में डिजिटल तकनीकि का समावेशन हो तो इस पर आधारित कई नई स्टार्टअप्स यूनिकॉर्न बन सकते हैं। साथ ही कुछ ऐसी सेक्टर हैं जो पश्चिमी विश्व में सेचुरेशन की स्थिति में आ रहे हैं परंतु एशिया के लिए वह एक नया अवसर होगा। इन क्षेत्रों में भी नए यूनिकॉर्न पैदा हो सकते हैं। वीडियो ग्लोबल के 2018 के एक सर्वे के अनुसार 70 से अधिक कंपनियों के फाउंडर या सीईओ में कई वेंचर कैपिटल तथा एंजल इन्वेस्टर भी शामिल थे। अधिकतर निवेशकों ने बाजार के ऐसे अनछुए सेक्टरों में निवेश करने को अधिक स्वीकार्यता दी है। निवेशकों द्वारा यह भी देखा जाता है कि किसी सेक्टर में तकनीकी की स्वीकार्यता है कितनी आसान है और इस आधार पर भी निवेश किया जाता है।

इन सभी उपरोक्त बिंदुओं के इतर एक सबसे महत्वपूर्ण बिंदु की चर्चा करना आवश्यक है जिसने भारत की स्टार्टअप क्षेत्र की वास्तविक ऊर्जा को विश्व के सामने रखने में सबसे अधिक योगदान दिया है। जी हां, यह है सरकार के द्वारा उपलब्ध कराए गए सही इकोसिस्टम एवं सहयोग की दृढ़ इच्छाशक्ति। इस क्रांति का सूत्रपात नरेंद्र मोदी की सरकार के द्वारा 2016 में स्टार्टअप इंडिया अभियान के साथ प्रारंभ हुआ जिसकी घोषणा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 15 अगस्त 2015 को दिल्ली के लाल किले से किया था। इस अभियान का लक्ष्य नए एवं तकनीकी आधारित स्टार्टअप को बढ़ावा देना था। इसी के साथ कंपनियों के वित्तपोषण के लिए भारत सरकार के द्वारा स्टैंड अप इंडिया अभियान को जोड़ा गया। इसी अभियान के अंतर्गत सिडबी यानी लघु उद्योग विकास बैंक के द्वारा 10,000 करोड़ रुपये का फंड निर्धारित किया गया था जो देश के स्टार्टअप्स को प्रगति करने में सहायक होगा।

यूनिकॉर्न क्या है?

यह ग्रीक कथाओं में वर्णित एकश्रृंगी धवल अश्व है, जो भारत एवं चीन के क्षेत्रों में मिलता है। संभव है कि भारत भूमि पर मिलने वाले गैंडों को ग्रीक कथाओं में यूनिकॉर्न कहा गया हो। वर्तमान आर्थिक विश्व में यूनिकॉर्न वह निजी स्टार्टअप कंपनियां हैं जिनका मूल्य एक बिलियन अमेरिकी डॉलर या इससे ऊपर होता है। यूनिकॉर्न शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम इन्वेस्टमेंट फर्म काउबॉय वेंचर्स की मालकिन आइलीन ली द्वारा 2013 में किया गया था। आशय है कि जैसे गैंडे की एक सींग उसके नाक पर होती है और वह सम्पूर्ण बल लगा इसी एक सींग की शक्ति से अपना बल प्रदर्शित करता है उसी प्रकार से यूनिकॉर्न कंपनियां भी किसी अत्यंत विशेष क्षेत्र में अपने व्यापार का विस्तार अत्यंत तीव्र गति से करती हैं।

विदेशी हस्तक्षेप को करारा जवाब

आशीष कुमार 'अंशु'
स्वतंत्र लेखक

वर्तमान नेतृत्व में 'डरा हुआ भारत' और 'सहमा हुआ भारत' की पहचान से बाहर निकल कर हमारे राष्ट्र की पूरी दुनिया के सामने आज एक नई छवि है नया भारत, सशक्त भारत। जिसका अर्थ होता है, एक ऐसा भारत जो जवाब देना जानता है। विदेशी बयानों को सुनकर पहले की तरह हल्की प्रतिक्रिया भर से काम नहीं चलाता बल्कि करारा जवाब देता है नया भारत।

डरा हुआ भारत' और 'सहमा हुआ भारत' की पहचान से बाहर निकल कर हमारे देश की पूरी दुनिया के सामने आज एक नई छवि है। नया भारत, सशक्त भारत। जिसका अर्थ होता है, एक ऐसा भारत जो जवाब देना जानता है। विदेशी बयानों को सुनकर पहले की तरह हल्की प्रतिक्रिया भर से काम नहीं चलाता। नया भारत करारा जवाब देता है। दूसरे देशों को बताता है कि हमारे आंतरिक मामलों में बयानबाजी करके कृपया हस्तक्षेप ना करें। हाल फिलहाल में देखें, तो भारत की विदेश नीति में काफी बदलाव आया है। पहले कभी विदेश से कोई टिप्पणी होती थी, तो उस पर सिर्फ प्रतिक्रिया आती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं है। वर्तमान नेतृत्व में भारत देश की घरेलू नीति और विदेश नीति में आए परिवर्तन की वजह से अब उन देशों को फटकार लगाई जाती है, जो भारत को लेकर अनर्गल टिप्पणी करते हैं। उन्हें साफ शब्दों में आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नसीहत दी जाती है।

इसके कई उदाहरण हैं। यथा किसान आंदोलन के समय जिस तरह वहां नक्सलियों और खालिस्तानियों के गठबंधन होने के संकेत मिल रहे थे। उस आंदोलन का लंबा चलना देश के लिए खतरा हो सकता था। उस आंदोलन में अंतरराष्ट्रीय गुटों की लॉबिंग साफ दिखाई दे रही थी। ऐसा लग रहा था कि किसान आंदोलन की आड़ में सरकार को कमजोर करने और झुकाने की कोशिश की जा रही है। बाद में इस बात का खुलासा स्वीडिश युवती ग्रेटा थनबर्ग द्वारा गलती से पोस्ट किये गये एक टूलकिट से हो गया। जिसमें आंदोलन को आगे बढ़ाने के संबंध में मार्गदर्शन किया गया था। पेगासस स्पाइवेयर के मामले को भी बेवजह अधिक तूल देने की कोशिश की गई। जिसमें कई वैश्विक संगठनों ने विपक्ष की पार्टियों को समर्थन किया और भारत सरकार पर दबाव बनाने का काम किया। मोदी सरकार ने एक-एक टूल किट को सही जवाब दिया। सरकार ने विदेशी हस्तक्षेप को कहीं भी अधिक महत्व नहीं दिया। इस बात में किसी को संदेह नहीं होना चाहिए कि 2014 से लेकर 2024 तक के 10 सालों में विपक्ष कमजोर हुआ है।

यह सच है कि बीते दस वर्षों में भारत में विपक्ष लगातार कमजोर पड़ा है, लेकिन उसकी इस कमजोरी के पीछे पार्टी में लगे भ्रष्टाचार, सांप्रदायिक तुष्टीकरण, राजनीतिक अपराधीकरण, परिवारवाद, जातिवाद जैसे दीमक की मुख्य भूमिका है। आज उनके नेताओं, विपक्ष की नीतियों और उनकी नीयत के ऊपर

मतदाता भरोसा करने को तैयार नहीं हैं। हर भारतीय को उस दिन गर्व हुआ जब भारत ने अमेरिका को फटकार लगाई। 20 साल पहले यह बात कोई भारतीय सोच भी नहीं सकता था। जब नागरिकता संशोधन कानून, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी तथा कांग्रेस के बैंक खातों में फ्रीज लगाने के मामले में अमेरिका ने टिप्पणी की थी। ऐसे मामलों में कठोर प्रतिक्रिया की भारत में परंपरा नहीं रही। वर्तमान सरकार में यह परिवर्तन देश ने महसूस किया। इस मामले में भारत के दिल्ली में स्थित अमेरिकी मिशन के कार्यवाहक उप-प्रमुख को बुलाकर फटकार लगाई गई, और अमेरिका को साफ संदेश दिया गया कि भारत के आंतरिक मामलों में उनकी तरफ से हस्तक्षेप नहीं किया जाना चाहिए। पहली बार की डांट फटकार का असर जब कम हुआ, चुनावी और न्यायिक प्रक्रिया में फिर टिप्पणी की गई, तो भारत ने दूसरी बार अमेरिका को फटकार लगाई और कहा कि भारत के ऊपर किसी बाहरी देश का टीका-टिप्पणी करना पूरी तरह से गलत है।

पहले भी मणिपुर में हुई हिंसक झड़पों के बीच अमेरिकी राजदूत ने कहा था कि अमेरिका इस राज्य में हो रही हिंसा को लेकर चिंतित है। भारत ने अमेरिका के बयानों को गंभीरता से लिया और अपनी आपत्ति जताई। भारत ने अमेरिका से कहा कि मणिपुर की स्थिति, भारत का आंतरिक मामला है और इसमें उन्हें दखलंदाजी नहीं करनी चाहिए। इस बात को उसे स्वीकार करना पड़ा।

फरवरी महीने में संयुक्त राष्ट्र की मानवाधिकार परिषद की बैठक में पाकिस्तान ने कश्मीर को लेकर आरोप लगाए थे। इन आरोपों पर तुर्की ने पाकिस्तान का साथ दिया था। पुराना भारत होता तो शायद संज्ञान भी नहीं लिया जाता, लेकिन वहां भारत की प्रतिनिधि अनुपमा सिंह ने तुर्की की टिप्पणी पर अपना प्रतिरोध जाहिर किया। इसी साल जनवरी की बात है, जब चीन के इशारों पर मालदीव ने, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और भारत के खिलाफ टिप्पणी की। भारत ने ना सिर्फ फटकार लगाई बल्कि कार्रवाई भी की। भारत के कड़े रुख का परिणाम था कि मालदीव की अर्थव्यवस्था में लगभग 30 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई। अब भारत से मालदीव के राष्ट्रपति मदद की गुहार लगा रहे हैं। पाकिस्तान अपना प्रोपेगेंडा लेकर दुनिया भर में पहले की तरह अब भी घूम रहा है लेकिन अब उसे कहीं महत्व नहीं मिल रहा। पहले भारत में आतंक मचा कर दहशतगर्द पाकिस्तान में जाकर छुप जाते थे। अब एक-एक कर उनकी पहचान हो रही है और कोई भारत समर्थक उन्हें घर में घुसकर मार रहा है। देश में जब एक राष्ट्र हितकारी

वर्ष 2014 से 2024 तक के दस सालों को केन्द्र में रखकर किसी शोध छात्र को भारत की विदेश नीति का अध्ययन करना चाहिए। इस अध्ययन से अनगिनत रोचक प्रसंगों को प्रकाश में आने का अवसर मिलेगा जो हर एक भारतीय को सशक्त भारत बनाने में योगदान के लिए प्रेरित करेगा।

सरकार है, ऐसे में देश से प्रेम करने वालों के हौसले बुलंद हैं। चाहे वह सेना में काम करने वाले हों, या फिर सुरक्षा एजेंसियां में। अब उन्हें महसूस हो रहा है कि वे किसी सरकार के लिए नहीं बल्कि देश के लिए काम कर रहे हैं।

मार्च महीने की बात है, जर्मनी की ओर से दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल की गिरफ्तारी पर बयान जारी किया गया। भारत ने बिना देरी किए इस पर अपना एतराज जताया और भारत ने नई दिल्ली में जर्मन राजनयिक को बुलाकर विरोध जताया। समाचार पत्रों में दोनों देशों के बीच तनाव की खबर प्रकाशित हुई। जर्मनी को अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने तनाव को कम करने की नीयत से भारत के साथ बेहतर रिश्ते रखने की इच्छा जाहिर की। जर्मनी की ओर से कहा गया कि भारत के साथ वह भरोसे के माहौल में काम करना और रिश्तों को आगे ले जाना चाहता है। जर्मनी के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने कहा कि हम भारत के साथ विश्वास के माहौल में मिलकर काम करना चाहते हैं। इसे भारत की कूटनीतिक सफलता के तौर पर पेश किया जा सकता है लेकिन साथ ही साथ यह प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की बढ़ती ताकत का उदाहरण भी है।

एक दशक पहले तक सिद्धांतों में उलझा रहने वाला भारत आज वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण किरदार बनकर उभरा है। कोरोना महामारी के दौरान भारत ने वैक्सीन मैत्री पहल के जरिए पूरी दुनिया को अपनी उपस्थिति का एहसास दिलाया। भारत आंतरिक मोर्चे की चुनौतियों से निपटने के साथ-साथ अब वैश्विक समस्याएं सुलझाने में भी दिलचस्पी ले रहा है। नेतृत्वहीनता के इस दौर में पूरी दुनिया की उम्मीदभरी निगाहें भारत की ओर हैं। इसका ताजा उदाहरण भारत की G 20 अध्यक्षता है। वर्तमान नेतृत्व पिछली सरकारों की भूलों को भी सुधार रहा है। चाहे वह शी जिनपिंग के बेल्ट एंड रोड इनीशिएटिव का विरोध हो। जिसका विरोध वर्ष 2013 में ही भारत की यूपीए सरकार को करना चाहिए था, जब चीन इस योजना पर काम प्रारंभ कर चुका था। लेकिन इसमें थोड़ी देरी हुई। वर्ष 2014 में मोदी सरकार बनने के साथ ही भारत ने चीन के सामने अपना विरोध दर्ज कराया। मोदी के नेतृत्व में नये भारत ने चीन की सैन्य आक्रामकता को भी उसी की शैली में जवाब दिया और कई मोर्चो पर चीन को पीछे हटने को मजबूर किया। इसके अलावा किसी औपचारिक गठबंधन में गए बगैर ही अमेरिका से करीबी स्थापित करने का कौशल भी नई सरकार ने दिखाया और यूरोपीय देशों की मदद से भारत ने अपनी घरेलू क्षमता बढ़ाने का भी काम किया। वर्ष 2014 से 2024 तक के दस सालों को केन्द्र में रखकर किसी शोध छात्र को भारत की विदेश नीति का अध्ययन करना चाहिए। इस अध्ययन से अनगिनत रोचक प्रसंगों को प्रकाश में आने का अवसर मिलेगा जो हर एक भारतीय को सशक्त भारत बनाने में योगदान के लिए प्रेरित करेगा। ■

भारतीय चिकित्सा पद्धति से गर्मियों में होने वाली बीमारियों से बचाव एवं उपचार

स्व के पुनर्जागरण के दौर में आयुर्वेद, योग, होम्योपैथी एवं प्राकृतिक चिकित्सा आधारित अपनी पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में भारतीयों की आस्था बढ़ी है। वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन के अनुसार, दुनिया की 80 प्रतिशत आबादी पारम्परिक चिकित्सा पद्धति अपनाती है। डॉक्टर सुनील आर्य, रोहिणी, दिल्ली स्थित आर्यावर्त वैदिक चिकित्सालय के निदेशक हैं तथा पंचगव्य, एक्यूप्रेशर एवं पंचकर्म जैसी थेरेपी से हृदय, मस्तिष्क, लीवर, गुर्दे, फेफड़े तथा पेट आदि की बीमारियों के उपचार के लिए प्रतिष्ठित हैं। पारा चढ़ने के साथ ही, उससे होने वाली बीमारियों से पीड़ित लोगों की संख्या भी बढ़ने लगी है। प्रस्तुत है गर्मी से होने वाली बीमारियों के संबंध में डॉक्टर सुनील आर्य से प्रेरणा विचार का यह डिजिटल साक्षात्कार।

तापमान बढ़ने और मौसम में अप्रत्याशित बदलाव से स्वास्थ्य संबंधी कौन से प्रमुख खतरे हो सकते हैं?

बहुत अच्छा प्रश्न आपने किया है। जैसे ही ग्रीष्म ऋतु शुरू होती है तो मौसम के बदलाव के कारण शरीर में बहुत सारे परिवर्तन आते हैं। शरीर में पित्त की वृद्धि होती है। बहुत तेज गर्म हवाएं चलती हैं तो उसके कारण से डायरिया हो जाना, उल्टी, दस्त होना, बुखार आना, सिर में दर्द, चक्कर आना, बेचैनी, घबराहट इस तरह के स्वास्थ्य संबंधी विकार शरीर में आ जाते हैं। मौसम संबंधी जब परिवर्तन आता है तो इसका बहुत हमें ख्याल रखना होता है। और ऋतु के अनुसार ही अपनी दिनचर्या और आहार विहार को संतुलित करना होता है।

नोएडा-दिल्ली क्षेत्र में पारा अभी से 40 डिग्री के पार पहुंचने लगा है। ऐसे में हाइपरथर्मिया (हीट स्ट्रोक, लू लगने) से बचाव एवं उपचार कैसे करें?

बिल्कुल गर्मी से बचने के लिए, लू से बचने के लिए बहुत सारी चीजों का हमें सेवन करना चाहिए, जैसे नारियल पानी, जूस, फलों में तरबूज, खरबूजा, ककड़ी और खीरा

डॉक्टर सुनील आर्य, निदेशक
आर्यावर्त वैदिक चिकित्सालय रोहिणी, दिल्ली

इन सब का सेवन हमें बढ़ा देना चाहिए। बाहर निकलते समय हमेशा सिर को ढक कर ही निकलना चाहिए और एक प्याज की गांठ जेब में रखकर चलेंगे तो उससे बहुत ज्यादा लू का प्रभाव शरीर पर नहीं होता है। खाने के पहले सलाद में भी कच्ची प्याज का अधिक सेवन करें। नींबू पानी, जलजीरा और इस प्रकार के जो ठंडे पेय हैं उनका अधिक सेवन करें। कोल्ड ड्रिंक और आइसक्रीम आदि इस प्रकार के जो जंक फूड की श्रेणी में जो आते हैं उनका बिल्कुल भी सेवन न करें। वह हमें और भी नुकसान पहुंचा सकते हैं। इसलिए प्राकृतिक और शुद्ध सब्जी और फलों का ही प्रयोग इस मौसम में करना चाहिए।

शरीर में निर्जलीकरण (डी-हाइड्रेशन) की समस्या को कैसे पहचानें? इससे बचाव और उपचार हेतु कौनसे पारंपरिक नुस्खे प्रभावी होते हैं?

गर्मी के मौसम में अक्सर डिहाइड्रेशन की समस्या हो जाती है। और इसका प्रमुख लक्षण है कि डिहाइड्रेशन के समय यूरिन के कलर में परिवर्तन और जलन। साथ में बेचैनी घबराहट, सिर में चक्कर आना जैसी समस्याएं भी होने लगती हैं। ऐसे लक्षण जब आए तो समझ लीजिए कि आप डिहाइड्रेशन का शिकार हो रहे हैं। उससे बचने के लिए उपरोक्त जो मैंने बताए उनका अधिक सेवन करेंगे तो डिहाइड्रेशन की समस्या नहीं होगी।

फूड पॉइजनिंग गर्मियों में एक आम बीमारी है। इससे बचने के लिए क्या सावधानी बरती जाएं?

फूड पॉइजनिंग गर्मी में होने वाली एक बीमारी है जो कि भोजन में यदि थोड़ा सा भी

विकार आ जाए, या पानी में भी कोई बैक्टीरियल या वायरल इंफेक्शन हो अर्थात गंदा खाना और गंदा पानी पीने से फूड पॉइजनिंग हो जाती है। कभी-कभी बासी खाने के कारण उसमें जो बैक्टीरियल ग्रोथ होती है उसके कारण भी फूड पॉइजनिंग हो जाती है। तो इसकी प्राथमिक चिकित्सा के लिए सबसे पहला कार्य है कि रोगी को वमन कराएं। पानी को उबालकर उसमें थोड़ा सेंधा नमक मिलाकर के डेढ़ से 2 लीटर पानी रोगी को पिलाकर के वमन करा दें। उसके उपरांत पंचगव्य, तुलसी अर्क और पंचगव्य तुलसी घन वटी व त्रिफला अर्क और त्रिफला घनवटी इन औषधियो का साथ में सेवन कराया जाए तो फूड पॉइजनिंग की समस्या दो से तीन दिन में बिल्कुल ठीक हो जाती है।

गर्मी में मधुमेह, उच्च रक्तचाप और हृदय रोगियों के जोखिम को कैसे कम किया जा सकता है?

गर्मी के मौसम में मधुमेह, हृदय या उच्च रक्त चाप के जो रोगी हैं उनको बहुत ही सावधानी रखने की आवश्यकता होती है। बहुत तेज गर्मी में बाहर ना जाएं ताकि डिहाइड्रेशन बिल्कुल ना हो। पानी अधिक मात्रा में पीते रहें और तुलसी का और पुदीने का नियमित सेवन करें। तुलसी की एक - दो पत्ती सुबह जल के साथ लें। पुदीने की पत्तियों की चटनी, कच्चे आम की चटनी, प्याज, आम रस या आम पन्ना इन सब चीजों का सेवन करते रहेंगे तो हृदय और मधुमेह के रोगियों के लिए भी उत्तम है। खाने में करेले और भिंडी की सब्जी, लौकी, तोरई, कद्दू की सब्जी और प्याज व मूली का सलाद के रूप में सेवन करें।

छोटे बच्चों एवं वृद्धों को गर्मी के दुष्प्रभावों से कैसे सुरक्षित रखें?

गर्मी में बच्चों और बूढ़े लोगों को बहुत जल्दी से लू आदि लगते हैं। ऐसे में प्रयास करें कि उनको बिल्कुल भी गर्मी के समय में बाहर धूप में ना लेकर जाएं। सूती कपड़ों का अधिक प्रयोग करें। घर में हमेशा जिस कमरे में बैठे हैं उसमें एक बाल्टी में पानी भर के रखें। ताकि वायु में थोड़ी नमी बनी रहे इसका विशेष ध्यान रखें, और खाने-पीने में खासतौर से ठंडी और मौसम के फल और सब्जियों का प्रयोग अधिक करें। गर्मी में मिट्टी के घड़े का पानी का सेवन अवश्य करें यह गर्मी से बचने के लिए एक अद्भुत उपाय हैं।

गर्मियों में छोटे बच्चों में कंजंक्टिवाइटिस एवं आई एलर्जी जैसे नेत्र विकार से बचाने के लिए क्या करें?

गर्मी में बच्चों को कंजेक्टिवाइटिस, आंखों का लाल हो जाना, आंखों से पानी आना, आंखें आ जाना जिसको बोलते है, यह बच्चों की आम समस्याएं होती हैं तो इससे बचने का बहुत ही साधारण और घरेलू उपाय है कि प्रतिदिन जब आप सो कर उठे, तो बासी मुंह की लार आंखों में स्याही की तरह लगाएं। स्नान करते समय मुंह में पानी भरकर के आंखों को पानी में डुबो करके 20 से 25 बार पलक झपकाएं या मुंह में पानी भरकर के छींटे भी मार सकते हैं। इसके अलावा 'पंचगव्य नेत्र औषधि' जो कि नेत्र विकारों के लिए एक अद्भुत औषधि है। वह भी नियमित रूप से बच्चे और बड़े सभी अपनी आंखों में डालें तो गर्मी से होने वाली तमाम नेत्र विकारों से आप सुरक्षित रह सकेंगे।

गर्मी में विशेषकर महिलाएं पिम्पल एवं सनबर्न जैसे रोगों से बेहाल रहती हैं। इनसे बचाव एवं उपचार हेतु कुछ पारंपरिक उपाय?

बहुत अच्छा प्रश्न आपने पूछा है। महिलाओं को खासतौर से गर्मी में सनबर्न या पिंपल हो जाना एक परेशानी होती है। ऐसे में मेरा सुझाव है कि घर में एक उबटन बनाकर रखें जिसमें जो आप संतरे या मौसमी या अनार खाती हैं उनके छिलके हमेशा सुखाकर उसका पाउडर बना लें। इसमें थोड़ा बेसन, थोड़ी मुल्तानी मिट्टी, थोड़ा शहद, थोड़ी ग्लिसरीन, थोड़ा गुलाब जल और देसी गाय का दूध और दही इन सबको मिलाकर पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को अपने चेहरे पर अच्छी प्रकार से लेप कर लें। आधा घंटा के लिए उसे मुंह पर लगा कर रखें। उसके बाद शुद्ध पानी से धोकर के नारियल का तेल या कोई भी अच्छा मॉइश्चराइजर लगा लें तो इससे पिंपल्स भी नहीं होंगे और आपकी त्वचा भी अच्छी प्रकार से चमकती रहेगी। मॉइश्चराइजर की जगह यदि प्राकृतिक एलोवेरा जैल भी अप्लाई करेंगे तो उससे भी चेहरे पर होने वाली सभी समस्याओं से आप सुरक्षित रह सकेंगे।

गर्मियों की छुट्टियों में बच्चे-बड़े सब घूमने-फिरने और पर्यटन आदि के लिए लंबी यात्रा और बाहरी प्रवास करते हैं। इस दौरान बीमारियों से स्वयं को बचाने के लिए क्या करें?

इस दौरान उनको कुछ चीजों का विशेष ध्यान रखना चाहिए जैसे बाहर का बहुत अधिक न खाएं, और खाना पड़े तो ताजा और कम मसाले वाली सब्जियों का ही उपयोग करें। रशेदार सब्जियों का ज्यादा उपयोग करें। रसीले फल जैसे शहतूत, संतरा, खरबूजा, तरबूज, आड़ू, जामुन आदि इस प्रकार के फलों का ज्यादा सेवन करें और अपने साथ जौ के सत्तू बनाकर के ले जाएं, कुछ ना मिले तो सत्तू में पानी मिला करके उस सत्तू का सेवन करें। वह भी गर्मियों के लिए एक अमृत पेय है। प्रवास के दौरान भी तेज धूप में बाहर न निकले, जब भी कभी निकालना पड़े तो सर पर टोपी या बड़े हैं तो पगड़ी पहन कर बाहर निकले। आंखों को बचाने के लिए धूप का चश्मा जरूर लगाएं। और घर आकर थोड़ा शरीर का तापमान ठीक हो जाए तो उसके बाद अपने हाथ पैरों को आंखों को अच्छी प्रकार से पानी से साफ करें। इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखेंगे तो प्रवास के दौरान किसी बीमारी का शिकार नहीं होंगे और अपनी छुट्टियों का आनंद ले सकेंगे। ■

पर्यावरण संरक्षण के विचार को बढ़ा रहे

मांगे राम चौहान (डिप्टी कलेक्टर, बिजनौर)

कम होती पेड़-पौधों की संख्या से धरती के तापमान के साथ-साथ इंसान के दिमाग का तापमान भी बढ़ रहा है। इससे अनेक परेशानियां पैदा होकर जीवन को जटिल बना रही हैं। इस परिस्थिति में पर्यावरण संरक्षण के लिए यूनीक 'चौहान मॉडल' प्रकृति का प्रहरी बनकर उभरा है।

पर्यावरण और प्रकृति संरक्षण आज की जरूरत हैं, क्योंकि हमारी औद्योगीकरण और विकास धरती को हानि पहुंचा रहा है, और इसका परिणाम हम सभी को भुगतना पड़ रहा है। कम होती पेड़-पौधों की संख्या से धरती के तापमान के साथ-साथ इंसानों के दिमाग का तापमान भी बढ़ रहा है। इससे अनेक परेशानियां पैदा होकर जीवन को जटिल बना रही हैं। इस परिस्थिति में पर्यावरण संरक्षण के लिए यूनीक 'चौहान मॉडल' जो मांगे राम चौहान ने इसी हालत को देखकर स्थापित किया प्रकृति का प्रहरी बनकर उभरा है।

प्रकृति और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में कम ही समय में चौहान मॉडल (सेवन प्लस टू स्टेप्स) ने देशव्यापी पहचान हासिल कर लिया है। साथ ही राष्ट्र और समाज, पृथ्वी प्रेम और जीव प्रेम के कर्तव्य बोध की भावना के प्रति समर्पण और आने वाली पीढ़ियों के लिए यह एक भगीरथ प्रयास का सफल उदाहरण भी है। उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले में डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्यरत पर्यावरण प्रेमी मांगे राम चौहान एक प्रकृति प्रेमी और मानवतावादी इंसान हैं। उनका विश्वास है कि पेड़ लगाओगे, तो पृथ्वी पर तापमान कम होगा। पेड़ की छांव आदमी के दिमाग की गर्मी और धरती का तापमान दोनों घटा सकती है। बस इसी संकल्प के साथ एसडीएम मांगे राम चौहान पेड़ लगाकर और लगवाकर प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा कर रहे हैं। एक पहल 'पौधे लगाओ और जमानत पाओ' एक मिशन की तरह अपने कार्यकारी जीवन में लागू कर चुके हैं। यही नहीं पेड़ लगाओ ही नहीं उसकी देखभाल करो, और बढ़ते हुए पेड़ के साथ इसकी सेल्फी भी भेजो। यानि पर्यावरण की

रक्षा और शांति व्यवस्था का जोड़ है उनका ये अभियान। उनकी सोच है कि अकारण प्रेम एक सबसे बड़ी उपलब्धि है। मनुष्य के दिमाग को जब भीतरी सतह पर प्रेम और लगाव होता है, तो आपराधिक परिवेश भी कम होता है। उनका कहना है कि तापमान धरती का नहीं लोगों का बढ़ा हुआ है। इसलिए वह कानून व्यस्था के साथ-साथ पर्यावरण का भी ध्यान रखते हैं।

इस मुहिम के जरिये जून 2019 से अब तक लगभग 20 हजार से अधिक पेड़ लगवा चुके हैं। क्योंकि पर्यावरण के प्रति उनकी सोच काफी अलग है। उनका मानना है कि कम होते पेड़ से आदमी का दिमाग गरम हो रहे हैं। जितने ज्यादा पेड़ होंगे, उतना ही धरती और इंसान दोनों का तापमान कम होगा। वह पर्यावरण को इंसान के गुस्से से जोड़कर देखते हैं। पेड़ लगाने का जुनून ऐसा है कि एसडीएम स्वयं ही फावड़ा उठा कर मिट्टी खोदते हैं। लोगों के साथ मिलकर पेड़ लगवाते हैं, पेड़ के अच्छी तरह से लग जाने तक, उसकी पूरी जानकारी लेते रहते है, कई बार वहीं रहकर सहयोग भी करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण के अमरोहा मॉडल के अंतर्गत सीआरपीसी की धारा 107/116/151 में पाबंद होने वाले व्यक्तियों को हरित बंध पत्र भरवाकर पौधे लगाने की शर्त पर जमानत दिए जाने का प्रावधान किया गया। यह आइडिया पहली बार उनके मन में अमरोहा जिले (यूपी) में तैनाती के दौरान आया। इन धाराओं में एक अभियुक्त होता है और दो जमानती होते हैं। जो जमानत के लिए न्यायालय में उपस्थित होते हैं। अभियुक्त से पांच फलदार/छायादार और दोनों जमानतियों से एक-एक फलदार/छायादार पेड़ स्वयं के खर्चे पर उनके घर, पशुशाला या खेत में लगाने के निर्देश देते हैं। इस प्रकार, सेवन प्लस टू योजना का उद्देश्य न केवल पर्यावरणीय क्षति को कम करना है, बल्कि व्यक्तियों और उनके परिवेश के बीच गहरे संबंध को बढ़ावा देना भी है। ऐसे में यदि उनके पास जमीन उपलब्ध न हो, तो सरकारी भूमियों या सरकारी रास्तों के किनारे पेड़ लगाकर पालन पोषण की जिम्मेदारी उनको दी जाती है। बातचीत के दौरान इस पहल के बारे में उन्होंने कहा कि जब कोई सीआरपीसी की इन धाराओं के अंतर्गत शांति भंग के प्रकरण में (जो गुस्से में व्यक्ति के बड़े तापमान को दर्शित करती है) में आता है तो उससे हरित बंध पत्र प्रेरित कर भरवाया जाता है। मांगेराम चौहान ने कहा कि यह सब संभव हुआ कार्य के प्रति लगाव और प्रकृति की रक्षा के विचार से। उनका कहना है कि भावी पीढ़ियों के लिए, पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हम सबकी सामूहिक जिम्मेदारी है। इस प्रकार मांगे राम चौहान की यह व्यक्तिगत पहल पर्यावरण के लिए परिवर्तनकारी सिद्ध हो रही है ■

युद्ध के दौर में वरदान हैं बुद्ध की शिक्षाएं

अनुपमा अग्रवाल
लेखिका

पूरी दुनिया को शांति, प्रेम, त्याग, अहिंसा व सद्भावना का संदेश देने वाले महात्मा गौतम बुद्ध का जीवन सदैव से प्रेरणादायक रहा है। बुद्ध की शिक्षाएं अथवा सिद्धांत मनुष्य को पीड़ा से मुक्ति दिलाने वाले हैं, जिन्हें सामूहिक रूप से धर्म या धम्म कहा जाता है। यह इस गहन सत्य पर जोर देते हैं कि व्यक्ति अपने सुख-दुख दोनों के लिए स्वयं जिम्मेदार है। प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अपने भाग्य को आकार देने, भविष्य को संवारने और सद्कर्मों के माध्यम से अपना भाग्य बदलने की शक्ति निहित होती है। बौद्ध धर्म, सेवा और करुणा के लिए समर्पित जीवन जीने, उदार हृदय को बढ़ावा देने, वाणी को नियोजित करने की कला सिखाता है। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का अनुसरण करके समस्त विश्व न केवल अहिंसा के मार्ग को अपना सकता है, अपितु विश्व शांति की राह पर आगे भी बढ़ सकता है। बुद्ध की शिक्षाएं लोगों को महान अष्टांगिक मार्ग का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं। क्योंकि इन शिक्षाओं में ज्ञान, करुणा, उदारता, धैर्य और दया का महत्व बताया गया है।

बौद्ध धर्म का मूल महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं से ही बना है। इनके अनुसार तीन सार्वभौमिक सत्य हैं। ब्रह्मांड में कुछ भी नहीं खोया है, सब कुछ बदलता है, कारण और प्रभाव का नियम। बुद्ध ने ज्ञान, नैतिक चरित्र और एकाग्रता के विकास पर जोर दिया। ज्ञानोदय के बाद बुद्ध ने

रूस यूक्रेन युद्ध, इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष के बाद अब ईरान का इजरायल पर हमले से तीसरे विश्व युद्ध की आहट सुनाई दे रही है। ऐसे में संघर्षरत विश्व के लिए प्रेम, अहिंसा व सद्भावना की गौतम बुद्ध की शिक्षाएं किसी उपहार से कम नहीं हैं। इसलिए तो प्रधानमंत्री मोदी कई मौकों पर कह भी चुके हैं कि भारत ने विश्व को युद्ध नहीं बुद्ध दिया है।

अपने पहले उपदेश में व्यक्ति को कष्टों से मुक्त करने के लिए महान अष्टांगिक महान मार्ग की स्थापना की। इसी क्रम में चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग और दश शील, बौद्ध शिक्षाओं का मजबूत आधार हैं। इन शिक्षाओं के जरिए सम दृष्टि, संकल्प, वाणी, कर्म से आजीविका को साधते हुए व्यायाम से मन की अति महत्वाकांक्षा पर अंकुश लगाकर अंदर से लेकर बाह्य तक शांति और सुख की स्थापना की जा सकती है।

महात्मा बुद्ध अहिंसा के पुजारी थे। उन्होंने जीवन भर 'अहिंसा परमो धर्म' का प्रचार-प्रसार किया। उनका मानना था कि मनुष्य को मन, वचन और कर्म से किसी भी प्राणिमात्र को हानि नहीं पहुंचानी चाहिए। महात्मा बुद्ध भारतीय विरासत की एक महान विभूति हैं, जिन्होंने बौद्ध धर्म के द्वारा सम्पूर्ण मानव सभ्यता को एक नई राह दिखाई। भारत से उद्भव हुआ बौद्ध धर्म आज चीन, वियतनाम, श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, भूटान, कम्बोडिया, मंगोलिया, हांगकांग, जापान समेत लगभग 18 देशों का मुख्य धर्म है। आज दुनियाभर में सांप्रदायिकता, आतंकवाद, नस्लवाद, व क्षेत्रवाद के नाम पर हिंसा हो रही है। इन सब का मूल कारण व्यक्ति, देश या संस्था की अधिकारवादी और अधिनायकवादी सोच है। जिसके केंद्र में है स्वार्थ। महात्मा बुद्ध के मध्यम मार्ग के सिद्धांत को अपनाकर उपरोक्त समस्याओं से बचा जा सकता है। इसलिए गौतम बुद्ध की शिक्षाएं उपभोक्तावादी युग में अति प्रासंगिक हैं। आधुनिक संघर्षशील युग में यदि दुनिया के लोग बुद्ध के सिद्धांतों का अनुसरण करें, तो निश्चित ही विश्व में शांति और सद्भावना जागृत हो जाएगी। वैश्विक स्तर पर पनप रहे भ्रष्टाचार, आतंकवाद, हिंसा, ईर्ष्या द्वेष आदि को समाप्त कर समरस, सम्पन्न, लोककल्याणकारी समाज बनाने हेतु बुद्ध के उपदेश सार्थक सिद्ध हो सकते हैं। मानव रक्षक की जगह भक्षक न बने इसके लिए उसे बौद्ध धर्म के सिद्धांतों को अंगीकार करना होगा। जिससे मनुष्य के आचरण, बुद्धि व विचारों में परिवर्तन आ सके क्योंकि समाज में एकता एवं समानता, मैत्री, न्याय एवं विश्व बंधुत्व के माध्यम से ही 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना साकार रूप ले सकेगी। ■

बमबारी को बम-बम में बदल, बीमारू से डॉक्टर बनता उत्तर-प्रदेश

डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया
गौतमबुद्ध विवि, ग्रेटर नोएडा

आज उत्तर-प्रदेश समस्या की जगह समाधान, विकृति की जगह संस्कृति और सियासत की जगह विरासत का प्रतीक है। यहां की हवा में अब बमबारी से निकली चीखें नहीं सीताराम, राधेश्याम और बम-बम भोले के स्वर गुंजायमान होते हैं। अब वह बीमारू नहीं स्वयं डॉक्टर बनने की राह पर है। उ.प्र. अब रोग का नहीं बल्कि दुनिया के शोध का विषय है जिसमें देश-दुनिया की जटिल समस्याओं का समाधान निहित है।

उत्तर-प्रदेश भगवान राम एवं कृष्ण की जन्मस्थली, महादेव शिव के शहर तथा भगवान बुद्ध के पहले एवं आखिरी उपदेश की तपोभूमि है। यह तुलसी, सूर और कबीर की भूमि है, गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम की भूमि है, मेरठ, झांसी, लखनऊ और कानपुर जैसे स्वतंत्रता संग्राम स्थलों की प्रेरणा भूमि है, सर्वाधिक अनाज, गन्ना एवं दूध पैदा करने वाली भूमि है, राष्ट्र रक्षा के लिए सेना को सर्वाधिक जवान देने वाली भूमि है, लोकतंत्र के मंदिर में सर्वाधिक प्रतिनिधि और देश को सर्वाधिक (नौ) प्रधानमंत्री देने वाली भूमि है। परंतु अदूरदर्शी नेतृत्व, राजनैतिक दुराग्रह, आर्थिक कुप्रबंधन एवं सरकारी अक्षमता से उ.प्र. इस दुर्दशा तक पहुंच गया था कि अध्यात्म, ज्ञान और शिक्षा की इस तपोभूमि के लिए वर्ष 2008 में एक अंग्रेजी अखबार ने प्रमुख शीर्षक से खबर लिखी, "Uttar Pradesh biggest terror hub after J&K", अर्थात् जम्मू-कश्मीर के बाद उत्तर प्रदेश, आतंक का सबसे बड़ा केंद्र है। तपस्वियों की यह भूमि आतंकी पैदा करने वाली टेरर फैक्ट्री कैसे बन गई? इसकी शुरुआत वर्ष 1985 में आंध्रा मूल के आजम गौरी और उ.प्र. मूल के करीम टुंडा द्वारा मिलकर लश्कर-ए-तैयबा को जमीनी मदद देने हेतु इकाई स्थापित करने और फिर 50 से ज्यादा बम-विस्फोटों के साजिशकर्ता एमबीबीएस डॉक्टर जलीस अंसारी उर्फ डॉक्टर बम के साथ मिलकर 1993 के मुंबई विस्फोटों को अंजाम देने से मानी जाती है। फिर जब भी देश में आतंकी हमले होते, निरपवाद रूप से संदिग्धों के सूत्र उ.प्र. से ही जुड़ते। गुंडे, माफिया और आतंकी उ.प्र. के शासन- प्रशासन को सीधे चुनौती देते और मनचाही जगह ऐसे बमबारी कर निकलते जैसे उन्हें सरकारी लाइसेंस प्राप्त हो। वर्ष 2005 में काशी के दशाश्वमेध घाट पर बम धमाके, वर्ष 2006 में काशी के संकटमोचन मंदिर और रेलवे कैंट स्टेशन पर बम धमाके, मई 2007 के गोरखपुर बम धमाके, वर्ष 2007 के ही फैजाबाद, लखनऊ एवं वाराणसी न्यायालयों में हुए बम धमाके, दिसंबर 2010 में काशी के शीतला घाट पर हुए धमाके जैसी घटनाएं उ. प्र. में आतंक की गहरी जड़ों और नागरिक सुरक्षा की बदहाली की कहानी बयां करते हैं। सरकार पर आतंकियों और माफियाओं की जकड़ का इससे घृणित उदाहरण क्या होगा कि वर्ष 2013 में उ.प्र. सरकार स्वयं संकटमोचन मंदिर एवं कोर्ट परिसरों में हुए बम विस्फोटों के आरोपी आतंकियों के मुकदमे वापिस करने की पहल करती है और प्रयागराज उच्च-न्यायालय को प्रदेश सरकार से प्रश्न करना पड़ा कि क्या ऐसे कृत्यों से सरकार आतंकवाद को बढ़ावा नहीं दे रही है? आज आप आतंकियों को छोड़ देंगे तो क्या कल उन्हें पद्मभूषण से भी नवाज़ देंगे?

आतंक की उर्वरा भूमि बने उ.प्र. में माफिया ने न केवल अपना आपराधिक साम्राज्य फैलाया, अपितु अपने राजनैतिक एवं आर्थिक साम्राज्य का भी चौतरफा विस्तार किया। राजनैतिक संरक्षण के लिए राजनेताओं की मदद करने वाले माफिया की हवस जब और बढ़ी तो वह स्वयं विधानमण्डल एवं संसद की दहलीज पार कर मंत्री पद हथियाकर सत्ता के हिस्सेदार, खेवनहार और नीति-नियंता बनने लगे। कई बार जनता को भ्रम होता कि निर्णय सरकार कर रही है या माफिया और लुटेरे? विधायकों, मंत्रियों एवं अन्य जन प्रतिनिधियों की हत्या होने लगी, जैसे वर्ष 1997 में कैबिनेट मंत्री ब्रह्मदत्त द्विवेदी की हत्या, 2005 में विधायक कृष्णानन्द राय एवं विधायक राजूपाल की दिन दहाड़े नृशंस हत्या।

उस दौर में उ.प्र. में जन-प्रतिनिधि और माफिया-प्रतिनिधि तथा लोक-सेवक और माफिया-सेवक में जनता अंतर न कर पाती। उत्सवों के समय दंगे फैलते, पुलिस एकतरफा कार्रवाई करती और उलटे निर्दोषों को ही यातनाएं देती। कर्तव्यपरायण अधिकारियों को प्रताड़ित किया जाता और उन्हें नौकरी छोड़ने तक के लिए बाध्य किया जाता। वर्ष 1991 में गठित कल्याण सिंह सरकार ने माफियाओं पर नकेल तो कसी परंतु माफियाओं के सौभाग्य से वह सरकार 1992 में ही गिर गई और उत्तर-प्रदेश फिर गुंडों-माफियाओं के चंगुल में आ गया। प्रदेश वासियों को इन पहचानों से चिढ़ाया जाता और उनके स्वाभिमान को ठेस पहुंचाई जाती। प्रदेश का प्रतिभाशाली युवा कुंठा का शिकार हो अपने प्रदेश का नाम तक बताने में भी संकोच करता।

दशकों के झंझावत से जूझ नए दौर में पहुंचा उ.प्र. आज देश-दुनिया के लिए नई परिभाषाएं गढ़ रहा है। कभी दंगा प्रदेश के रूप में कुख्यात रहे उत्तर-प्रदेश के वर्तमान मॉडल को आज फ्रांस के दंगों का भी समाधान माना जाता है। विदेशी सांसद और मंत्री तक भी कोविड-19 प्रबंधन के उ.प्र. मॉडल की दाद देते हैं। हरियाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात एवं दिल्ली जैसे प्रदेश उ.प्र. मॉडल का अनुकरण करते हैं। उ.प्र. में जो बहन-बेटियों के लिए खतरा बनता है, कानून को लाचार मानता है, गरीबों और पिछड़ों का उत्पीड़न करता है आज या तो जेल में है या फिर जहन्नुम में। पहले महिला, व्यापारी और आमजन जिन गुंडों-माफियाओं के सामने गिड़गिड़ाते थे, आज वो थानों में तख्ती लटकाए जान की भीख मांगते हैं।

बीमारू के तमगे वाला उत्तर-प्रदेश आज रामराज्य के प्रजातांत्रिक स्वरूप के आधार पर एक डॉक्टर राज्य के रूप में उभर रहा है, जिसका संकल्प है- 'निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह'। यह आवश्यक है समतामूलक समाज एवं सुशासन की स्थापना के लिए। आज उत्तर-प्रदेश मॉडल समाधान है अपराध का, गुंडा-माफिया का, भ्रष्टाचार का, पलायन का, महिला उत्पीड़न एवं कोरोना जैसे महामारियों का, गुंडा-टैक्स जैसे अपराधों का। अपराध के परिस्थितिकी तंत्र के कारण जहां नए निवेशक आना नहीं चाहते थे और पुराने सुरक्षित निवेश गंतव्य ढूंढते थे, आज उत्तर प्रदेश उनकी पहली पसंद बनकर उभर रहा है क्योंकि उत्तर-प्रदेश मॉडल निवेश की सुरक्षा और जरूरी ढांचे की गारंटी है। आज उत्तर प्रदेश 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था में अपना योगदान करने का लक्ष्य तय करता है। उत्तर प्रदेश का निर्यात जो वर्ष 2017–18 में 88000 करोड़ रुपये था, वर्ष 2022–23 में 175000 करोड़ रुपये पहुंच गया है। प्रदेश ने बजट में भी लंबी छलांग लगाई है। उ.प्र. में

बीमारू के तमगे वाला उत्तर-प्रदेश आज रामराज्य के प्रजातांत्रिक स्वरूप के आधार पर एक डॉक्टर राज्य के रूप में उभर रहा है, जिसका संकल्प है- 'निसिचर हीन करउँ महि भुज उठाइ पन कीन्ह'।

वर्ष 2022 में हुए पहले निवेश समिट में 4.28 लाख करोड़ रुपये और वर्ष 2023 के दूसरे ग्लोबल निवेश सम्मिट में मीडिया, शिक्षा, डाटा केंद्र, ऊर्जा, सूचना तकनीक, इलेक्ट्रॉनिक्स, पर्यटन, एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग आदि के क्षेत्र में 36 लाख करोड़ रुपये के निवेश प्रस्तावों को मंजूरी मिलना उ.प्र. में निवेशकों के बढ़ते भरोसे का प्रतीक है। व्यापारिक सरलता सूची में भी अब उ.प्र. देश में चोदहवें से दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। उ.प्र. ने 64,000 हेक्टेयर भूमि को माफियाओं से मुक्त कराकर वहां उद्योग स्थापित कर, भूमिहीनों को भूस्वामी बनाकर, बेघरों को घर देकर, युवाओं, दलितों और पिछड़ों को उ.प्र. की विकास यात्रा का पथिक बनाकर अंत्योदय को साकार किया है। आज प्रदेश में सर्वाधिक 15 सक्रिय हवाईअड्डे (एयरपोर्ट्स) हैं जबकि गुजरात में 10 तथा महाराष्ट्र एवं कर्नाटक में 9–9 हवाईअड्डे हैं। आज राज्य में 6 एक्सप्रेसवे क्रियाशील हैं और 8 निर्माणाधीन हैं। प्रदेश के हर जिले में मेडिकल कॉलेज क्रियाशील अथवा निर्माणाधीन हैं। उत्तर प्रदेश अब अंतर्देशीय जलमार्गों वाला पहला प्रदेश है। राज्य के पारंपरिक शिल्पकारों, कारीगरों, कलाकारों और युवा उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2023 में ग्रैटर नोएडा में पहला अंतरराष्ट्रीय ट्रेड शो आयोजित हुआ और दूसरा सितंबर 2024 में आयोजित होना है। पहले शो में लगभग 60 देशों के 500 लोगों ने भाग लिया जिसमें व्यापारिक प्रतिनिधि, उद्योगों के प्रमुख, नीति-निर्माता तथा अन्य हितधारकों ने भाग लिया। इसमें लगभग 2000 प्रदर्शकों ने उ.प्र.की शिल्पकला, कारीगरी, भोजन, कला और संस्कृति का प्रदर्शन किया। गौतमबुद्ध नगर में महिला केंद्रित लगभग 2500 रेडीमेड गार्मेंट्स फैक्टरियों को बढ़ावा दिया जा रहा है। प्रदेश से पलायन रोकने, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और प्रदेश के संतुलित विकास के लिए वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट को बढ़ावा दिया जा रहा है। अयोध्या के दीपोत्सव, वाराणसी की देव दीपावली, मथुरा के रंगोत्सव, प्रयागराज के कुम्भ और कांवड़ यात्रा की बम-बम की गूँज से उ.प्र. की सांस्कृतिक पहचान पुनर्स्थापित हो रही है। आज उ.प्र. वासी परीक्षाओं की शुचिता, भ्रष्टाचार निवारण, सस्ती, सुलभ एवं गुणवत्ता परक शिक्षा और प्रतिभा के अनुरूप अवसर सुनिश्चित कर सुरंग के दूसरे छोर की रोशनी देखने के लिए टकटकी लगाए हुए हैं।

आज उ.प्र. समस्या की जगह समाधान, विकृति की जगह संस्कृति और सियासत की जगह विरासत का प्रतीक है। यहां की हवा में अब बमबारी से निकली चीखें नहीं सीताराम, राधेश्याम और बम-बम भोले के स्वर गुंजायमान होते हैं। अब वह बीमारू नहीं स्वयं डॉक्टर बनने की राह पर है। उ.प्र. अब रोग का नहीं बल्कि दुनिया के शोध का विषय है, जिसमें देश-दुनिया की जटिल समस्याओं का समाधान निहित है। अल्बर्ट आइंस्टीन के अनुसार 'बुद्धिमत्ता का पैमाना है बदलाव लाने की क्षमता' और उ.प्र. मॉडल इस पैमाने पर शत-प्रतिशत खरा अवश्य उतरता है। (समस्त संदर्भ स्रोतों के प्रति कृतज्ञता) ■

धर्म व संविधान एक दूसरे के पूरक

प्रणय कुमार
लेखक एवं शिक्षाविद

लोकतंत्र में न्यायपालिका की भूमिका प्रहरी की होती है। व्यवस्था के सभी घटकों की निगरानी का दायित्व उस पर ही होता है। ऐसे में भारतीय संस्कृति की स्थापना एवं रक्षा का सबसे बड़ा दायित्व और कर्तव्य न्यायाधीशों का है। लेकिन इस तथ्य की अकसर अनदेखी होती है, जो कि देश के लिए दुखद है। इसी क्रम में मार्च माह पुणे में एक अदालत के भवन की आधारशिला रखते हुए 'भूमि-पूजन' समारोह के दौरान सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश अभय एस ओका ने कहा कि न्यायालय-परिसर में आयोजित किसी भी कार्यक्रम में पूजा-अर्चना या दीप-प्रज्ज्वलन जैसे अनुष्ठान बंद कर देने चाहिए। उन्होंने कहा कि इसकी बजाय न्यायालय के किसी भी आयोजन में संविधान की प्रस्तावना की प्रति रखनी चाहिए और उसी के आगे सिर झुकाना चाहिए। इसी कार्यक्रम में न्यायाधीश बीआर गवई ने जस्टिस ओका के मत से पूर्ण एवं मुखर सहमति जताते हुए कहा कि "किसी धर्म विशेष की पूजा करने के स्थान पर हमें अपने हाथों में फावड़ा लेकर नींव के लिए निशान लगाना चाहिए और दीप-प्रज्ज्वलन की बजाय पौधों को पानी देकर कार्यक्रम का उद्घाटन करना चाहिए। इससे पर्यावरण के मामले में समाज में एक अच्छा संदेश जाएगा।" इससे एक सप्ताह पूर्व, 28 फरवरी को सेवानिवृत्त न्यायाधीश कुरियन जोसेफ ने सर्वोच्च न्यायालय के ध्येय-वाक्य पर प्रश्न उठाया ? रोचक है कि वर्ष 2018 में एक संगोष्ठी में जस्टिस जोसेफ ने कहा था कि "कैथोलिक चर्च ने हमेशा दुनिया भर की अन्य परंपराओं एवं विश्वासों को अपने-आप में आत्मसात किया है। यह हमारे संविधान की प्रस्तावना की तरह ही है, जो हम (वी) शब्द से प्रारंभ होती है।" प्रकारांतर से यहां उन्होंने कैथोलिक चर्च की तुलना भारत के संविधान की प्रस्तावना से की थी।

संविधान की मूल प्रति में शताब्दियों से चली आ रही राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परंपरा की महत्ता एवं अस्मिता को रेखांकित करने के लिए 22 चित्र हैं, जिनमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण से लेकर हनुमान जी, यज्ञ कराते वैदिक ऋषि आदि प्रमुख हैं।

धर्म शब्द को समझने की जरूरत : सामान्यतः ऐसे तर्कों एवं वक्तव्यों के मूल में या तो रिलीजन, मजहब एवं संप्रदाय आदि को धर्म का पर्याय मानने की भूल होती है या सेकुलरिज्म की भ्रामक एवं मिथ्या अवधारणा। हमें याद रखना होगा कि "सेकुलरिज्म" मूलतः भारतीय संविधान का हिस्सा नहीं था। इसे आपातकाल के दौरान 42वें संविधान संशोधन के माध्यम से सम्मिलित किया गया था, जब पूरा विपक्ष जेल में था। स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है कि संविधान-परिषद ने 'सेकुलरिज्म' को प्रस्तवना में सम्मिलित नहीं करने का विकल्प क्यों चुना था और बाद में ऐसी कौन-सी परिस्थितियां निर्मित हुईं कि इसे रातों-रात सम्मिलित करने की विवशता आ पड़ी? उल्लेखनीय है कि संविधान की मूल प्रति में शताब्दियों से चली आ रही राष्ट्रीय, सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परंपरा की महत्ता एवं अस्मिता को रेखांकित करने के लिए 22 चित्र हैं, जिनमें मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, श्रीकृष्ण से लेकर हनुमान जी, लक्ष्मण जी, भगवान बुद्ध, भगवान महावीर, राजा भरत, महाराजा विक्रमादित्य, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, महारानी लक्ष्मीबाई, यज्ञ कराते वैदिक ऋषि आदि प्रमुख हैं। मौलिक अधिकार भाग -3 में श्रीराम, सीता जी एवं लक्ष्मण जी का चित्र है, जो लोगों के अधिकारों के सर्वोच्च संरक्षक के रूप में मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की श्रद्धेय स्थिति की सार्वजनिक अभिव्यक्ति एवं स्वीकृति है। यहां यह बताने की अलग से आवश्यकता नहीं कि संविधान-परिषद के तत्कालीन सदस्य, 'सेकुलरिज्म' के आज के तथाकथित झंडाबरदारों की तुलना में कहीं

अधिक 'सेक्युलर' तथा नीति एवं नीयत को लेकर अत्यधिक स्पष्ट, निष्पक्ष एवं पारदर्शी थे। सच यही है कि संविधान की प्रस्तवना में 'सेकुलरिज्म' शब्द जुड़ने के सदियों पूर्व से ही सनातन संस्कृति की कोख में सह-अस्तित्व की कामना व भावना पलती रही है। वस्तुतः 'सेकुलरिज्म' एक ऐसी अवधारणा है, जिसे यूरोप से भारत में आयातित किया गया है।

मंगलकारी भारतीय संस्कृतिः हमारे देश में धर्माचार्यों के शासन की नहीं, प्रत्युत अनुशासन की परंपरा अवश्य रही है। धर्म को रिलीजन अथवा मजहब के रूप में परिभाषित नहीं किया जा सकता, क्योंकि धर्म समग्र जीवन-पद्धत्ति से भी विशालतर अवधारणा है। यह एक ब्रह्मांडीय विचार है, यह वैविध्य में एकत्व देखने की अंतर्दृष्टि है। पंथ से अलग धर्म पार्थक्य में एकत्व ढूंढने, चेतना-संवेदना को विस्तार देने तथा आंतरिक उन्नयन के प्रयास करता है। वह समरूपता का पोषक नहीं, विविधता, वैशिष्ट्य एवं चैतन्यता का संरक्षक है। वह किसी मत-विशेष या सत्ता को येन-केन-प्रकारेण प्रतिष्ठापित करने का बाह्य-आक्रामक अभियान नहीं, अपितु सत्य का सतत अनुसंधान है। वह करणीय-अकरणीय, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य के सम्यक बोध या उत्तरदायित्व का दूसरा नाम है। सनातन संस्कृति में धर्म एक व्यापक अवधारणा है, जो मानव मात्र के लिए है, किसी समूह या जाति विशेष के लिए नहीं। इसीलिए हर यज्ञ-अनुष्ठान के बाद सनातन संस्कृति में - धर्म की जय हो, अधर्म का नाश हो, प्राणियों में सद्भावना हो, विश्व का कल्याण हो - जैसी मंगलकामनाएं व्यक्त की जाती हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण भी यही कहते हैं कि "जब-जब धर्म का नाश होता है, अधर्म बढ़ता है, मैं अवतरित होता हूं।" ध्यान रहे कि उन्होंने यह नहीं कहा कि जब-जब किसी मत या पंथ का नाश होता है, तब-तब उनका अवतरण होता है। धर्म कहता है- "एकं सत् विप्राः बहुधा वदन्ति", (सत्य एक है, लेकिन इसकी अभिव्यक्तियां अलग-अलग हैं), आ नो भद्र क्रतवो यंतु विश्वतः (सभी दिशाओं से अच्छे विचार मेरे पास आएं), उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् (उदार चरित्र वाले लोग संपूर्ण वसुधा को ही अपना परिवार मानते हैं), सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भागभवेत।

आलोकधर्मी सनातन संस्कृति : निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि धर्म उन व्यवस्थाओं अथवा नियमों के समुच्चय का नाम है जो व्यक्ति, समाज, राष्ट्र एवं मानव जीवन के विभिन्न अंगों को धारण किए रहता है। वहीं मजहब एवं रिलीजन का संबंध कुछ निश्चित आस्थाओं-मान्यताओं से होता है। भारतीय ज्ञान-परंपरा में धर्म का जो व्यापक अर्थ निहित है, क्या उससे कभी उदासीन रहा जा सकता है? 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अंधकार से प्रकाश की ओर - यह मानव की प्रगति-यात्रा का

संविधान की प्रस्तवना में 'सेकुलरिज्म' शब्द जुड़ने के सदियों पूर्व से ही सनातन संस्कृति की कोख में सह-अस्तित्व की कामना व भावना पलती रही है। वस्तुतः 'सेकुलरिज्म' एक ऐसी अवधारणा है, जिसे यूरोप से भारत में आयातित किया गया है।

दिशानिर्देश है। चिरकाल से मनुष्य नन्हा-सा दीप जलाकर अंधकार की सत्ता को चुनौती देता आया है। हम आलोकधर्मी संस्कृति के वाहक हैं। ज्ञात हो कि नए संसद-भवन के ऊपरी तल पर लगाए गए अशोक स्तंभ के अनावरण-अनुष्ठान के शुभ अवसर पर सबसे पहला मंत्र "ॐ वसुंधराय विद्महे भूतधत्राय धीमहि तन्नो भूमिः प्रचोदयात्" बोला गया। अब जो पृथ्वी सबका भरण-पोषण करती है, उससे आशीर्वाद की कामना भी भला संकीर्ण, अनुदार व सांप्रदायिक हो सकती है? क्या धरती, आकाश, सूरज, चंद्रमा, नदी, पर्वत, जल और प्रकाश जैसे प्राकृतिक उपादानों के बिना कोई रह सकता है। जीवन और जगत को देखने का हम भारतीयों का भी अपना भिन्न एवं विशेष दृष्टिकोण है। उसे ही बृहत्तर परिप्रेक्ष्य में भारतीय संस्कृति कहकर संबोधित किया जाता है।

इन दिनों भारतीय संस्कृति में मान्य एवं प्रचलित ऐसे तमाम प्रतीकों को लांछित या अपमानित करने का चलन-सा चल पड़ा है। इसीलिए केवल दीप-प्रज्ज्वलन अथवा भूमि-पूजन ही क्यों, कभी सरस्वती पूजा, कभी गणेश-वंदना, कभी विद्यालयों में होने वाली प्रातः वंदना, कभी वैदिक मंत्र, कभी रंगोली, के लिए उकेरे गए मांगलिक चिह्न, कभी शंख-ध्वनि, पुष्पार्चन, कभी सूक्ति-श्लोक, कभी राष्ट्र-गान, कभी राष्ट्रगीत, कभी राष्ट्रीय ध्वज, कभी सेंगोल (राजदंड) तो कभी अशोक-स्तंभ जैसे राष्ट्रीय प्रतीकों को लेकर भी अनावश्यक विवाद पैदा किया जाता है या जान-बूझकर इनकी उपेक्षा और अवमानना की जाती है। राष्ट्रीय प्रतीकों अथवा युगों से चली आ रही सांस्कृतिक परंपराओं को मज़हबी या कथित सेक्युलर चश्मे से देखना न तो न्यायसंगत है, न ही विवेकसम्मत। यहां तक कि भारत माता की जय बोलने पर भी बहुतों को आपत्ति होती है। जबकि यह सहज स्वीकार्य सिद्धांत होना चाहिए कि मज़हब बदलने से पुरखे और संस्कृति नहीं बदलती। ये प्रतीक एवं परंपराएं हमारे राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक जीवन के अभिन्न अंग हैं, न कि धार्मिक जीवन के। इनका संबंध पंथ विशेष की पूजा-पद्धतियों या मान्यताओं से न होकर राष्ट्र की अविच्छिन्न सांस्कृतिक परंपराओं से है, जीवन और जगत को देखने के चिरंतन दृष्टिकोण से है।

चूंकि संस्कृत भारत के स्व, स्वत्व एवं संस्कृति का मूल स्रोत है, इसलिए उन्हें इससे भी आपत्ति है। क्या-क्या बदलेंगें? 'धर्मो रक्षति रक्षितः', 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय', 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'सेवा अस्माकं धर्मः', 'नभः स्पर्शम दीप्तम्', 'योगक्षेमं वहाम्यहम्' जैसे अधिकांश ध्येय-वाक्यों का संबंध तो सनातन शास्त्रों एवं संस्कृत से ही है, तो क्या केवल इसी आधार पर इन्हें बदल देना चाहिए? ■

राम मंदिर राष्ट्र की आत्मा का संरक्षण है – डॉ. कृष्ण गोपाल

आप सभी राम मंदिर निर्माण के प्रत्यक्ष दृष्टा हैं। राम सभी उपमाओं से परे हैं। जब हम राष्ट्र उद्धार की बात करते हैं तो हम सभी की आंखों के सामने भारत का एक चित्र आता है। एक ऐसा भारत जिसमें सैकड़ों नदियां और अनेक पहाड़ हैं। हजारों वर्षो का हमारे पास इतिहास है। विराट भारत भूमि, एक विराट दैवीय स्वरूप में हमारी आंखों के सामने अत्यंत श्रद्धावान, सारे देश के नागरिकों के लिए एक भक्ति का केंद्र है। ये संबोधन है सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, डॉ. कृष्ण गोपाल का। वह श्री राम मंदिर से राष्ट्र का पुनरुद्धार की गोष्ठी को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ध्यान में रखिये ये शरीर है। क्योंकि आत्मा कुछ और है। ये आत्मा और शरीर का संबंध केवल भारत में ही है। बाकी अन्य देशों में नहीं है। अन्य देशों की आत्मा वहां के शासन और राज्य में रहती है। राज्य के नष्ट होते ही वे देश समाप्त हो जाते हैं।

मेसोपोटामिया, उनका राज्य समाप्त हुआ तो वो समाप्त हो गया। ग्रीक, वहां का राज्य समाप्त हुआ, वो समाप्त हो गया। इसी तरह रोम भी समाप्त हो गाया। उन देशों की आत्मा के साथ ही वे देश चले गये। वो संकट हमारे देश पर भी आया। एक समय देश हिल गया। आक्रमणकारियों ने इस देश की आत्मा को नष्ट करने के लिए नाना प्रकार के प्रयत्न किये। यहां की आत्मा धर्म में है, अध्यात्म में है। उस अध्यात्म और धर्म की अनेक प्रकार से हमारे ऋषियों, मुनियों, साधु-संतों, नाथों, वैरागियों ने भिन्न-भिन्न प्रकार की व्याख्या की है। उस अध्यात्म को जगाये रखने के प्रयत्न किये हैं। राज आएगा और जाएगा। राजा

हमारे देश के अंदर का जो धर्म है, उस अध्यात्म को बार-बार बचाये रखने का प्रयास करता है। और राम उस धर्म की धुरी हैं। इसलिए उसी स्थान पर राम मंदिर का पुनर्निर्माण इस राष्ट्र की आत्मा का पुनरुद्धार है। ये राम मंदिर राष्ट्र की आत्मा का एक संरक्षण है।

आएगा और जाएगा। हमारे यहां घरों में राजाओं के चित्र नहीं लगते हैं उनके चित्र स्थायी नहीं हैं। संक्षेप में कहा जाए तो हमारे देश के अंदर का जो धर्म है, उस अध्यात्म को बार-बार बचाये रखने का प्रयास करता है। और राम उस धर्म की धुरी हैं।

डॉ. कृष्ण गोपाल ने कहा कि बाद में योगायोग ऐसा आया कि देश पर एक हजार साल से लगातार आक्रमण शुरू हुए और बाहर के लोगों ने हमारे देश की आत्मा को नष्ट करने का प्रयत्न किया। केवल राम मंदिर तो एक मंदिर है, ऐसे दस हजार मंदिर तोड़ दिये गये। वो आक्रमणकारी सोचते थे एक बार मंदिर टूट जाएगा, मूर्तिया नष्ट कर दी जाएंगी तो शायद इस समाज को आसानी से अपने मत में परिवर्तित कर सकते हैं। लेकिन उनका भ्रम था।

राम मंदिर पांच बार टूटा है और बना है। यह छठी बार फिर बना है। ऐसे ही प्रसंग में एक जगह रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं.. लेकिन आक्रमणकारी हिन्दू समाज की उस भावना को नहीं तोड़ सके जो बार-बार उसी स्थान पर मंदिर निर्माण के लिए चुपचाप शांति से बैठकर प्रतीक्षा करते थे। ये प्रतीक्षा का काल एक हजार वर्ष भी हो सकता है। कभी कभी प्रतीक्षा का काल लंबा हो गया। इसलिए उसी स्थान पर राम मंदिर का पुनर्निर्माण इस राष्ट्र की आत्मा का पुनरुद्धार है। ये राम मंदिर राष्ट्र की आत्मा का एक संरक्षण है। वो प्रतीक्षा भी करते थे अवसर आने का। योगायोग से 1947 में देश स्वतंत्र हुआ। वह अवसर भी आया, लेकिन मानसिकता बदल गयी, जिनके हाथ में सत्ता आयी उनकी मानसिकता उचित नहीं थी। होना तो ये चाहिए था कि जो हमारे सभी प्रसिद्ध मंदिर थे, जहां भारी श्रद्धा थी, उनका पुनर्निर्माण होता। वह सच्ची आजादी होती। लेकिन वह केवल सोमनाथ में हो सका बस। इस देश में ऐसी भी विचारधारा के लोग थे जिनको ये अच्छा नहीं लगता था, हालांकि वो हिंदू ही थे। फिर शेष हिन्दू समाज ने संकल्प लिया, कमर कसी, बार-बार आंदोलन किया, कारसेवा की, शिला पूजन किया, स्थान-स्थान पर संपर्क किया, विराट सम्मेलन किया। लेकिन विराट हिन्दू समाज बहुत शांति से

प्रेरणा विमर्श 2023 कार्यक्रम पर बनी स्मारिका का विमोचन करते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सह सरकार्यवाह डॉ. कृष्ण गोपाल जी, लोक गायिका मालिनी अवस्थी जी व अन्य

संघर्ष किया। वह संघर्ष का स्वरूप राम की नीति के अनुसार था।

वहीं कार्यक्रम की अतिथि प्रसिद्ध लोक गायिका मालिनी अवस्थी ने श्रीराम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा के अनुभव को साझा करते हुए कहा कि आज हम वास्तव में नये भारत के साक्षी बन कर बैठे हैं। कभी पीढ़ियों बाद ये कथा कही जाएगी कि भारत के चेतना में इस प्रकार से परिवर्तन आया और उसकी सबसे प्रमुख घटना जो घटी वह थी 22 जनवरी 2024 को रामलला की प्राण प्रतिष्ठा की। अयोध्या में इस ऐतिहासिक क्षण ने सदा के लिए भारतीय चेतना और भारतीय स्वाभिमान को बदल कर रख दिया है। हम अकसर हनुमान गढ़ी, अयोध्या आते रहे हैं। दशकों पहले मैंने पिता जी से एक बार प्रश्न किया कि राम अयोध्या में जन्में हैं, लेकिन राम का मंदिर कहां है। पिता ने कहा कि बजरंग बली ने प्रण लिया है कि वह राम को लेकर आएंगे और उनकी कृपा से यह संभव भी हुआ। मैंने वो भी क्षण देखा कि जब एक बार आंधी पानी में रामलला का टेंट उड़ गया था। और ये पावन दिन भी देखा। जब रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण पत्र भी आया, तो मैंने भाव विभोर होकर उस निमंत्रण पत्र को हाथों में लिया और 22 जनवरी की अविस्मरणीय घड़ी में शामिल हुई। वहीं गोष्ठी को संबोधित करते हुए सूर्यप्रकाश टोंक ने कहा कि उन्होंने अयोध्या रामलला मंदिर में जो महसूस किया वहीं हर भारतीय अपने घर बैठकर भी गौरवान्वित और भावविभोर हुआ।

गौरतलब है कि प्रेरणा शोध संस्थान न्यास, नोएडा द्वारा भाऊराव देवरस सरस्वती विद्या मंदिर में 13 अप्रैल को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें दो सत्र था प्रथम सत्र में प्रेरणा विमर्श अतिथि वक्ता मिलन समारोह का आयोजन किया गया। मिलन समारोह में प्रेरणा विमर्श के सभी अतिथियों ने संवाद के माध्यम से अपने-अपने अनुभवों को साझा किय। इस कार्यक्रम में मुख्य अथिति सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ डॉ. कृष्ण गोपाल जी के साथ सैकड़ों लेखक, पत्रकार और वक्ताओं ने सकारात्मक संवाद किया। इस सत्र के संयोजक डॉ. अनिल त्यागी थे और मंच का संचालन डॉ. नीलम कुमारी व डॉ. प्रियंका सिंह ने किया।

वहीं दूसरे सत्र, गोष्ठी में सह सरकार्यवाह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ डॉ. कृष्ण गोपाल के साथ लोक गायिका मालिनी अवस्थी और सूर्यप्रकाश टोंक, क्षेत्र संघचालक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में प्रेरणा विमर्श 2023 की स्मारिका और प्रेरणा विचार पत्रिका का भी विमोचन हुआ। कार्यक्रम के अंत में प्रेरणा शोध संस्थान न्यास की अध्यक्षा प्रीति दादू ने मंच पर आसीन एवं कार्यक्रम में आए सभी अतिथियों का धन्यवाद ज्ञापन किया। उन्होंने कहा कि जो भी सुझाव आज इस संवाद के माध्यम से हमें प्राप्त हुए हैं, उन सब पर प्रेरणा की ओर से ध्यान देकर कार्य किया जाएगा। कार्यक्रम का संचालन मोनिका चौहान द्वारा किया गया। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि मालिनी अवस्थी द्वारा सेक्टर 62 स्थित प्रेरणा भवन में वृक्षारोपण भी किया गया। इस तरह सभी गणमान्य लोगों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाकर उसको सफल बनाया। साथ ही स्वयं को प्रेरणा विमर्श से जुड़े रहने के लिए भाग्यशाली बताया। ■

72 घंटे में मेरठ परिक्षेत्र अंग्रेजों से मुक्त

रमेश शर्मा
वरिष्ठ पत्रकार

साल 1857 का महान राष्ट्रीय समर अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष व अद्वितीय पराक्रम का प्रतीक है। यह राष्ट्रीय भावना के प्रबल उबाल की प्राकृतिक परिणति थी। जिसने औपनिवेशिक शासन की जड़ें हिलाकर, राष्ट्र चेतना के संदेश के रूप में भारतीय इतिहास में स्वर्णांकित है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में 8 मई 1857 ऐसी तिथि है जब अंग्रेजों से मुक्ति के लिए मेरठ सैन्य छावनी में भारत की मुक्ति का उद्घोष हुआ। जन सामान्य भी इस संघर्ष में सहभागी बना और एक क्रांति ज्वाला पूरे देश में फैल गई और यह स्वातंत्र्य समर की चिंगारी कभी ठंडी नहीं हुई। क्योंकि इसका प्रभाव बहुत दूरगामी था। 1857 का राष्ट्रीय स्वातंत्र्य समर पहला ऐसा संघर्ष था जिसका पूरे देश में व्यापक विस्तार हुआ। इससे पहले के संघर्षो में दो कमियां रहीं। एक तो वे स्थानीय अथवा क्षेत्रीय रहे और दूसरा, संघर्ष राज सैनिकों तक सीमित रहा। उन संघर्ष में समाज का सहयोग तो रहा पर प्रत्यक्ष नहीं। लेकिन 1857 के समर में पूरा भारतीय समाज सहभागी बना। तत्कालीन समय में अंग्रेजों की दबाव और शोषणकारी नीति से जनता में बहुत रोष था जो मेरठ से आरंभ हुई इस क्रांति में प्रकट हुआ।

क्रांति का बीजारोपण : मेरठ से आरंभ हुई इस क्रांति का बीजारोपण मेरठ से बहुत दूर बंगाल की बैरकपुर छावनी में हुआ। इसका तात्कालिक कारण सैन्य छावनियों में गाय और सुअर की चर्बी-युक्त कारतूस था। इन कारतूसों का उपयोग 1853 से आरंभ हुआ था। इस कारतूस का कवर मुंह से खींचा जाता था। इसकी सूचना सैनिकों ने अधिकारियों तक पहुंचाई किन्तु बात नहीं बनीं। तब मार्च 1857 में बंगाल की बैरकपुर छावनी के सैनिकों ने आवाज उठाई और प्रतीक के रूप में सामने आये सिपाही मंगल पांडे ने खुलकर आवाज उठाई। वे इस सैन्य छावनी की 34 वीं इन्फेन्ट्री में सिपाही थे। उन्होने अपने कुछ साथी सैनिकों से चर्चा की और संयुक्त रूप से प्रतिकार करने का आह्वान किया। यह सूचना कमांडर तक पहुंची। सैन्य कमांडर ने 29 मार्च 1857 को परेड बुलाई और कारतूस लोड कर फायरिंग का आदेश दिया किन्तु सैनिकों ने आदेश मानने से इंकार कर दिया। इस पर कुछ अंग्रेज सैन्य अधिकारी परेड मैदान में ही सैनिकों के साथ दुर्व्यवहार करने लगे, पीटने लगे। इसका सिपाही मंगल पांडे ने विरोध किया तो सार्जेंट-मेजर जेम्स ह्यूसन बंदूक लेकर उनकी ओर दौड़ा। वह समीप आता इससे पहले ही सिपाही मंगल पांडे ने उस पर गोली चला दी। वह बच गया। जनरल जॉन हर्से ने मंगल पांडे को बंदी बनाने का आदेश जमादार ईश्वरी प्रसाद को दिया। जमादार ईश्वरी प्रसाद ने आदेश मानने से इंकार कर दिया। वहां मौजूद सैनिकों में से कोई भी क्रांतिकारी मंगल पांडे को गिरफ्तार करने आगे नहीं आया, तब उस छावनी से मौजूद एक अन्य टुकड़ी के सिपाही बुलाये गये। सैनिक शेख पलटू अपनी टोली के साथ आगे आया। मंगल पांडे और ईश्वरी प्रसाद बंदी बना लिये गये। 6 अप्रैल को उनका कोर्ट मार्शल हुआ। 8 अप्रैल को क्रांतिकारी मंगल पांडे और 21 अप्रैल को जमादार ईश्वरी प्रसाद फांसी पर चढ़ा दिये गये। बटालियन के सभी सैनिकों से हथियार ले लिये गये। अंग्रेज सरकार ने यह पूरी रेजिमेंट भंग कर दी। सभी सैनिकों को अपमानित कर बर्खास्त कर दिया गया। इस इन्फेंट्री के सैनिकों को अपमानित करने की प्रतिक्रिया देश भर की छावनियों में हुई, लेकिन मुखर स्वर देने का काम मेरठ छावनी से हुआ।

मेरठ में क्रांति का उद्घोष : बंगाल की बैरकपुर छावनी में जिस 34 वीं इन्फेन्ट्री को भंग करके सैनिकों को अपमानित किया गया था उसके अधिकांश सैनिक उत्तर प्रदेश के थे। क्रांतिकारी मंगल पांडे भी उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के थे। सैनिक अपने-अपने घरों को लौटे। ये समाचार चारों ओर फैल गया। छावनियों में नये कारतूस को लेकर जो असंतोष था उसे सैनिकों के अपमान के समाचार ने क्रांति की हवा को आंधी में बदल दिया। गौरतलब है कि मेरठ की सैन्य छावनी देश की सबसे बड़ी छावनी थी और दिल्ली का सुरक्षा कवच भी। यहां लगभग पांच हजार सैनिक रहा करते थे। इनमें 2357 भारतीय मूल के और 2038 सैनिक विदेशी। इन्हें नियंत्रित करने के लिए अंग्रेज अधिकारियों की टोली तैनात थी जिनकी सुरक्षा के लिए स्वचालित बंदूकों के साथ बारह सिपाहियों का दल सदैव सक्रिय रहता था। स्वचालित बंदूकों वाले ये सभी सैनिक विदेशी होते थे। सैनिकों में कारतूस से उत्पन्न असंतोष कम करने के लिए कमांडिंग ऑफीसर लेफ्टिनेंट कर्नल जॉर्ज स्मिथ ने 24 अप्रैल 1857 को परेड बुलाई और कारतूस के बारे में फैली चर्चा को केवल अफवाह बताया। लेकिन क्रांति की लौ जलती रही। 8 मई 1857 को आयोजित ऐसी ही एक अभ्यास परेड में 90 सैनिक उपस्थित थे। इनमें से 85 ने यह कारतूस छूने से इंकार कर दिया। इन सैनिकों से हथियार लेकर बंदी बना लिया गया। 9 मई को इन बंदी सैनिकों की परेड हुई। इन सभी सैनिकों को कोर्ट मार्शल के आदेश हुए। सजायें सुना दी गईं। पूरी छावनी में इस निर्णय से भारी असंतोष फैला और अगले ही दिन 10 मई को छावनी के सभी भारतीय सैनिक शस्त्र लेकर अंग्रेजों पर टूट पड़े।

आठ मई को सैनिकों द्वारा अपने कमांडर का आदेश न मानने के केवल 72 घंटे के भीतर ही पूरे मेरठ परिक्षेत्र में सशस्त्र क्रांति का आरंभ हो जाना सभी शोधकर्ताओं और इतिहासकारों के लिए आश्चर्य का विषय रहा है। कुछ तथ्य मेरठ छावनी में सैन्य क्रांति के आरंभ की प्रेरणा स्वामी दयानन्द सरस्वती के मेरठ प्रवास और उनके ओजस्वी संबोधन को मानते हैं। फिलहाल इस बिगुल के स्वरूप, विस्तार और एकनिष्ठा को लेकर आज भी शोध जारी है।

दस मई को रविवार का दिन था। सामान्य दिनों की भांति ही सूर्योदय हुआ, लेकिन इस दिन का सूर्योदय हर दिन से अलग उम्मीद के किरण के साथ हुआ था। पहली किरण के साथ ही भारतीय सैनिक हथियार लेकर निकल पड़े। उन्होंने सबसे पहले शस्त्रागार पर अधिकार कर सभी बंदी सैनिकों को मुक्त किया। विद्रोह को दबाने के लिये कुछ अधिकारियों ने मोर्चा संभाला किन्तु मारे गये। सैनिकों का यह समूह छावनी से बाहर आया। और नगर के विभिन्न स्थानों से होते हुए

यह समर प्रबल और सुसंगठित था। इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि दस मई को प्रातः सूर्योदय से तीसरे प्रहर तक के कुछ घंटों में ही समूचा मेरठ परिक्षेत्र अंग्रेजों से मुक्त हो गया था। न केवल नगर परिक्षेत्र अपितु आसपास के गांवों से भी अंग्रेजी सरकार के वफादार कारिंदों को मारकर भगा दिया था।

सरकारी कार्यालय पहुंचकर क्रांति की लौ में सब हवन कर दिया। स्वतंत्रता सेनानियों का एक समूह कोतवाली की ओर गया, यहां उपस्थित कोतवाल धनसिंह मानों प्रतीक्षा ही कर रहे थे। उन्होंने आजादी के दीवानों को देखते ही कोतवाली का शस्त्रागार खोल दिया और कोतवाली में तैनात समूचा पुलिस बल भी क्रांति में शामिल हो गया।

यह समर प्रबल और सुसंगठित था। इसका अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि दस मई को प्रातः सूर्योदय से तीसरे प्रहर तक के कुछ घंटों में ही समूचा मेरठ परिक्षेत्र अंग्रेजों से मुक्त हो गया था। न केवल नगर परिक्षेत्र अपितु आसपास के गांवों से भी अंग्रेजी सरकार के वफादार कारिंदों को मारकर भगा दिया था। मेरठ पर पूर्ण अधिकार करने के बाद क्रांतिकारियों की सैन्य टुकड़ियां दिल्ली की ओर रवाना हो गईं। क्रांतिकारियों की पहली घुड़सवार टुकड़ी 11 मई 1857 को प्रातः दिल्ली पहुंच गई थी और दूसरी टुकड़ी दोपहर तक। यहां पहुंचकर सबने मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर से सत्ता संभालने का आग्रह किया जिसे उन्होंने स्वीकार कर लिया गया।

इस तरह कुछ समय के लिए सही, लेकिन यह स्वतंत्रता संग्राम आरंभ से अपने उद्देश्य में सफल रहा। देश के कई हिस्से अंग्रेजों से मुक्त हो गये। पर यह क्रांति अधिक दिनों तक स्थाई न रह सकी। हालांकि इसका प्रभाव बहुत दूरगामी रहा। मेरठ में क्रांतिकारियों की सत्ता बमुश्किल लगभग दो माह और दिल्ली में चार माह तक चली। अंग्रेजों ने जुलाई 1857 में मेरठ, दिल्ली और उसके आसपास के गांवों में जो दमन, सामूहिक नरसंहार किया उसके रोंगटे खड़े कर देने वाले विवरण इतिहास के पन्नों में मिलते हैं। दिल्ली की सत्ता अंग्रेजों के हाथ में सितम्बर माह में आ गई थी। बादशाह बहादुरशाह जफर को बंदी बनाकर रंगून भेज दिया गया। मेरठ में हुई इस क्रांति का विवरण मेरठ के गजेटियर में है। इसके अतिरिक्त इस आंदोलन के उद्देश्य, योजना और बलिदान का वर्णन आचार्य दीपांकर द्वारा रचित पुस्तक 'स्वाधीनता आंदोलन' और स्वातंत्र्य वीर सावरकर की पुस्तक '1857 का स्वातंत्र्य समर' सहित अनेक पुस्तकों में भी है। वहीं ब्रिटिश इतिहासकारों और सैन्य अधिकारियों ने दुर्भावनावश इसके कारण और दमन का विवरण लिखा है। मेरठ में इस क्रांति की स्मृति में शहीद स्मारक भी बना हुआ है, जिस पर उन सभी 85 सैनिकों के नाम अंकित हैं, जिन्होंने आठ मई 1857 को सबसे पहले कमांडर का आदेश मानने से इंकार कर दिया था। इस तरह इस क्रांति ने ही भारत के स्वतंत्रता की नींव रख दी थी, जिससे बाद के दिनों में भी देशभक्तों को प्रेरणा मिलती रही। ■

भोजशाला में सरस्वती मंदिर के सबूत

सुभाष चन्द्र सिंह
पूर्व सूचना आयुक्त, उत्तर प्रदेश

इतिहास के अनेक स्रोत यथा शिलालेख, ग्रंथ और वहां उत्कीर्ण चिह्न इस बात की पुष्टि कर रहे हैं कि भोजशाला रूपी महाविद्यालय सरस्वती सदन था। ऐसे में सर्वे से करोड़ों भारतीयों को बड़ी उम्मीदें हैं।

मध्य प्रदेश की भोजशाला इन दिनों चर्चा में है। इसका प्रमुख कारण उसका वैज्ञानिक सर्वेक्षण किया जाना है। यह वैज्ञानिक सर्वेक्षण भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा किया जा रहा है। बताते चलें कि इस सर्वेक्षण का आदेश मध्य प्रदेश की इंदौर हाईकोर्ट ने मार्च में दिया था। हाईकोर्ट ने कहा था कि इस पूरे परिसर के 50 मीटर के दायरे में हाईटेक सर्वे किया जाए ताकि जो इमारत है उसको कोई नुकसान न पहुंचे। पेनेट्रेटिंग रडार का भी इस्तेमाल किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि यह भोजशाला मध्य प्रदेश के धार जिले में स्थित है। 1034 में महाराज भोज ने इसका निर्माण कराया था। इस पर मुसलमानों के कुदृष्टि पहले से ही पड़ी थी। 1456 में मुहम्मद खिलजी ने भोजशाला को ढहा कर मकबरा बनवा दिया। इसी के साथ गहरा विवाद पैदा हो गया। सन् 1902 में तत्कालीन अंग्रेज वायसराय ने इसके रखरखाव के लिए 50 हजार रुपये आवंटन किए। 1933 में तत्कालीन राजा आनंदराव की तबियत बिगड़ी तो बताते हैं कि उन्होंने मुसलमानों को उसमें नमाज पढ़ने की अनुमति दे दी। उससे पहले भले ही वह मकबरा था लेकिन मुसलमानों को नमाज पढ़ने की अनुमति नहीं थी। आजादी के बाद भोजशाला को राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया और उसके रखरखाव का जिम्मा भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग के पास आ गया। बताते हैं कि तत्कालीन अंग्रेजों द्वारा मंदिर में विराजमान सरस्वती की प्रतिमा (वाग्देवी की प्रतिमा) को लंदन ले जाया गया और आज भी लंदन के संग्रहालय में वह प्रतिमा विराजित है।

गौरतलब है कि भोजशाला ज्ञान और बुद्धि की देवी माता सरस्वती को समर्पित एक बहुत ही प्राचीन मंदिर है। इसकी स्थापना परमार राजवंश के सबसे बड़े शासक राजा भोज ने की थी। वह शिक्षा, संस्कृति और साहित्य के अनन्य उपासक थे। यह एक महाविद्यालय था जिसे बाद में भोजशाला के रूप में जाना गया। यानी यह स्थान देवी सरस्वती का मंदिर था, जहां देश-विदेश से बड़ी संख्या में छात्र संस्कृति, शास्त्र और साहित्य की शिक्षा लेने आते थे। इसके अलावा यह महाविद्यालय संगीत, खगोल विज्ञान, योग, आयुर्वेद और वेदांत की शिक्षा का भी बड़ा केंद्र था। यानि भोजशाला एक विशाल शैक्षिक केंद्र था। मथुरा, काशी की तरह भोजशाल में हर कोई बिना किसी विशेज्ञयता के अवशेष में हिन्दू धर्म से जुड़े प्रतीक और **चिह्नों** को सहज ही देख सकता है। हालांकि भारत जब हिंदुओं का देश रहा है तो वैसे किसी स्थल के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है फिर भी अनेक संस्कृत और प्राकृत भाषा के शिलालेख और ग्रंथों में इसके बारे में अनेक तथ्य मौजूद हैं।

वैसे भी इतिहास गवाह रहा है कि मुस्लिम आक्रांताओं ने हिन्दुओं के हर उस महत्वपूर्ण स्थल को नष्ट करने का प्रयत्न किया जो तत्कालीन समय में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म के बड़े केंद्र थे। जिस तरह सुनियोजित ढंग से अयोध्या, मथुरा और काशी में मंदिरों को तोड़ा उसी साजिश का शिकार हुआ धार का ये सरस्वती मंदिर भी।

अन्य मंदिरों की तरह भोजशाला को भी एक बार नहीं बल्कि अनेक बार मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा तोड़ा गया। इसलिए जरूरी है कि जिस तरह अयोध्या में राम मंदिर पर सुप्रीम कोर्ट ने अकाट्य सच को आधार बनाकर राम मंदिर के पक्ष में ऐतिहासिक फैसले दिया। उसी तरह इस सर्वे का इंतजार पूरे राष्ट्र को है। सभी की निगाहें इस सर्वे की रिपोर्ट और कोर्ट पर हैं। ■

डाटा साइंस में स्वर्णिम अवसर

अदिति सिंह
लॉ स्टूडेंट, दिल्ली मेट्रोपॉलिटन एजुकेशन

डाटा साइंस एक तेज़ी से बढ़ता हुआ क्षेत्र है, जो व्यवसायों और संगठनों के लिए निर्णय और प्रक्रिया निर्धारण में आवश्यक हो गया है। भारत में, डाटा साइंस ने हाल के वर्षों में बहुत गति प्राप्त की है और इसका दायरा प्रतिदिन बढ़ रहा है। डाटा साइंस एक अंत:विषय क्षेत्र है जो बड़े डाटा सेट से सांख्यिकीय विश्लेषण, मशीन लर्निंग और अन्य तकनीकों के उपयोग में महत्वपूर्ण बिंदु बनता है। यह सांख्यिकी, गणित, कंप्यूटर विज्ञान और डोमेन विशेषज्ञता को जोड़ता है। इसलिए डाटा साइंस में छात्रों के लिए देश-विदेश में बड़ी संभावनाएं हैं।

आज डाटा साइंस का उपयोग सोशल मीडिया यथा फेसबुक ई-कॉमर्स कंपनी आदि प्लेटफॉर्म पर पसंद और नापसंद जानने के बाद अब इसका प्रयोग चुनाव में भी किया जाने लगा है। विशेषकर विकसित देशों में हथियार के रूप में इसके प्रयोग के बाद अब विकासशील देशों में भी इसके दुरुपयोग की संभावना है। यह सब संभव होता है डाटा साइंस की बदौलत। इसी के मद्देनजर फेसबुक या अन्य महत्वपूर्ण संस्थानों से डाटा चोरी आए दिन सुर्खियों में रहता है। इसलिए डाटा साइंटिस्ट की मांग दिनोंदिन बढ़ रही है। यदि आपकी मैथ्स और कंम्प्यूटर में रुचि है तो आपके लिए यह फील्ड करियर को नई ऊंचाई दे सकता है। राष्ट्रीय और बहुराष्ट्रीय कंपनियों के अलावा अन्य कंपनियां भी डाटा साइंसटिस्ट की सेवाएं ले रही हैं। इससे डाटा प्रोफेशनल्स की लोकप्रियता और बढ़ गई है। विभिन्न डिवाइसेज, सेंसर्स, बायोमेट्रिक मॉनीटर्स और कंप्यूटर्स आदि के जरिए कंपनियां डाटा एकत्रित करती हैं। ये डाटा इन कंपनियों के लिए शोध के लिए प्रयोग किए जाते हैं। इसके जरिए बहुराष्ट्रीय कंपनियां पूर्वानुमान लगाकर अपनी सेल्स की रणनीति के लिए भविष्य की प्लानिंग करती हैं। ऐसे में डाटा साइंस में विशेषज्ञता रखने वाले यानी डाटा साइंटिस्ट की मांग बढ़ जाती है।

योग्यता और पाठ्यक्रम : डाटा साइंटिस्ट बनने के लिए ग्रेजुएट होना आवश्यक है इसके लिए आप बीई/बीटेक, एकाउंटिंग या फिर कंप्यूटर साइंस में ग्रेजुएट होने के बाद आप इस फील्ड में प्रवेश ले सकते हैं। प्रमुख आईआईटीज समेत देश की अन्य निजी विश्वविद्यालयों में में बीटेक, डाटा साइंस और एमटेक डाटा साइंस के रूप में अलग से कोर्स कराए जा रहे हैं। इसी क्रम में कुछ इंस्टीट्यूट ऑनलाइन के द्वारा बिग डाटा एनालिटिक्स में शॉर्ट टर्म कोर्स करा रहे हैं। डाटा साइंस के प्रमुख संस्थान हैं यथा- आईआईटी दिल्ली/खड़गपुर, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, लखनऊ/कोलकाता आदि संस्थानों से डाटा साइंस का कोर्स कर आप डाटा साइंटिस्ट बन सकते हैं।

अवसर और वेतन : कंपनियों के बीच बढ़ती प्रतियोगिता के चलते डाटा एनालिस्ट की मांग सरकारी और प्राइवेट दोनों ही क्षेत्रों में है। पहले इनकी मांग गूगल, लिंक्डइन, फेसबुक, ट्विटर, ई-कॉमर्स जैसी कंपनियों में थी। जहां डाटा स्टोर के विश्लेषण के जरिए भविष्य की रणनीति तय की जाती है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों से प्रोफेशनल डाटा साइंटिस्ट की मांग हर क्षेत्र में बढ़ती जा रही है। क्योंकि इनका आजकल प्रयोग राजनीति के साथ अन्य विधाओं में भी होने लगा है। ऐसे में आने वाला समय डाटा इंडस्ट्री का होगा। जहां एक परिपक्व डाटा साइंटिस्ट की मांग बेतहाशा बढ़ेगी। टॉप 10 नौकरियों की लिस्ट में डाटा एनालिस्ट का पद भी शामिल है। इस तरह इस फील्ड में शुरुआत से ही अच्छा वेतन मिल जाता है। यानी शुरू से ही 10 लाख से ऊपर तक सालाना पैकेज मिलता है। इसलिए जो छात्र 12वीं पास करके करियर के बारे में सोच रहे हैं उनके लिए डाटा साइंस का क्षेत्र नई ऊंचाइयों पर पहुंचा सकता है। ■

त्यौहारों, मेलों के साथ गर्मी की शुरुआत

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

भारतीय संस्कृति और उसके संस्कार प्रत्येक ऋतु और समय के साथ स्वाभाविक रूप से विभिन्न आयामों से गुंथे हुए हैं। वह भी वैज्ञानिक मानदंडों की कसौटी पर।

भारतीय संस्कृति और त्यौहार का संबंध जीवात्मा की तरह है। अपने यहां किसी न किसी रूप में हर महीने की अपनी महिमा है, तो ऐसे में वैशाख माह का भी धार्मिक दृष्टि से बड़ा महत्व है। क्योंकि इस समय तक फसलों की कटाई हो चुकी होती है। बगीचे आम के फलों से लदे होते हैं। कोयल की मीठी कूक से मन भावविभोर हो जाता है। स्कूलों में छुट्टियां होने से घरों में बच्चों का साथ अनायास ही सीखने-सिखाने का स्वाभाविक माध्यम होता है। और इसमें भारत की विविधता और उत्सव धर्मिता के कारण त्यौहारों, मेलों और उत्सव की एक श्रृंखला बन जाती है। जिससे जीवन की एकरसता दूर होती है। ऐसे में उस विशेष दिन पारंपरिक पकवान और उत्सव से संबंधित कथाएं लाल, पीले आदि रंगों की पोशाकों से छटा निराली होती है। इन दिनों में कुछ लोग अपने बजट अनुसार पर्यटन की योजना बनाकर किसी रमणीय त्यौहार और तीर्थ स्थल पर चले जाते हैं। इससे सामाजिक समरता बढ़ती है। हमारा देश कृषि प्रधान है, इसलिए इस समय किसान भी फुसरत के क्षणों में उत्सवों और उमंग का हिस्सा बनते हैं।

त्यौहारों की बात करें तो मई माह के इगितुन चाल्ने (आग में चलना) की बात ही निराली है। यह सिरिगाओ गोवा की राजधानी पणजी से 30 किमी० दूर, सिरिगाओ के मंदिर में मनाया जाता है। इसमें देवी लैराया के भक्त शामिल होते हैं। बाकि भक्त जयकारों के साथ उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। इसी क्रम में पुष्प मेला गंगटोक, सिक्किम में फूलों की सुंदरता और वृक्षारोपण के ज्ञान के साथ, स्वदेशी पौधों के बारे में व्याख्यान और सेमिनार ज्ञानार्जन के स्रोत बनते हैं। स्वादिष्ट क्षेत्रीय व्यंजनों के साथ, याक की सवारी का अपना ही आनंद होता है। जिन्हें रोमांच पसंद है, उनके लिए रिवर राफ्टिंग है। इसी तरह मोत्सु महोत्सव, नागालैंड में एओ जनजाति द्वारा मनाया जाने वाला एक प्रमुख त्यौहार है। छोटे से खूबसूरत राज्य का यह उत्सव बहुत जीवंत होता है। उत्सव का मुख्य उद्देश्य भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करना है। इस दौरान अपने नायकों की स्तुतियां भी गाई जाती हैं। देशभर से आये हुए लोगों को सहज ही इस उत्सव में स्थानीय व्यंजनों और नागालैंड की संस्कृति का अनोखा रूप देखने को मिलता है।

इसी क्रम में वरुथिनी एकादशी और वल्लभाचार्य जयंती उत्सव को भक्तजन धूमधाम से मनाते हैं। ऐसे ही मासिक कार्तिगाई पर भगवान कार्तिकेय से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए घर के द्वार पर दीपक जलाने की परंपरा का बड़ा महत्व है। 10 मई को भगवान परशुराम जयंती के दिन उनके उच्च आदर्श, लक्ष्यों की प्राप्ति, त्याग और संकल्प की प्रतिबद्धता से हम सभी को प्रेरणा मिलती है। इसको अक्षय तृतीया भी कहा जाता है, जो नए प्रयास, व्यवसाय शुरू करने, सोना खरीदने के लिए यह दिन बहुत शुभ होता है। इस दिन बिना मुहूर्त के भी किसी भी कार्य की शुरुआत कर सकते हैं। इसी तरह बसव जयंती, लिंगायतों द्वारा पारंपरिक रूप से मनाई जाने वाली बसवन्ना की जयंती है। वह 12वीं सदी के एक प्रसिद्ध हिंदू, कन्नड़,

दार्शनिक एवं शिव के अनुयायी थे। विशेषतः उनका जन्मदिन कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र, तेलंगाना में उत्सव बसवेश्वर मंदिरों में भव्यता से मनाया जाता है। इसी तरह मातंगी जयंती, देवी मातंगी को दस महाविद्या में नौवीं महाविद्या के रूप में पूजते हैं। इनके पूजन से वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। इस दिन कन्या पूजन का भी विधान है।

इसी क्रम में 10 से 12 मई तक ग्रीष्म उत्सव माउंट आबू, राजस्थान के इकलौते हिल स्टेशन पर असाधारण, दिलचस्प कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है, जो जुलूस के साथ शुरू होता है। आदि शंकराचार्य जयंती इसी माह में 12 मई को है। महान संत, प्रसिद्ध दार्शनिक, आदि शंकराचार्य का जन्म केरल के कलाडी क्षेत्र में हुआ था। उन्होंने अद्वैत वेदांत दर्शन के सिद्धांत पर चलकर, हिंदू संस्कृति को तब बचाया, जब हिंदू संस्कृति को संजोय रखने की सबसे अधिक आवश्यकता थी। इसी दिन श्री रामानुजाचार्य की भी जयंती है। विशिष्टाद्वैत वेदान्त के प्रवर्तक रामानुजाचार्य ऐसे वैष्णव सन्त थे, जिनका भक्ति परम्परा पर बहुत गहरा प्रभाव रहा। उन्होंने उपनिषदों, ब्रह्म सूत्रों के दर्शन को मिश्रित कर भक्ति परंपरा को एक मजबूत बौद्धिक आधार दिया। इसी तरह चिथिरई महोत्सव मदुरै तमिलनाडु, मदुरै के प्रसिद्ध मंदिर में भगवान सुंदरेश्वर के साथ, देवी मीनाक्षी के विवाह के उपलक्ष में मनाया जाता है। जिसमें लोग बड़े उत्साह से भाग लेते हैं। इसी क्रम में बगलामुखी जयंती 15 मई को है। इन्हें माँ पीताम्बरा या ब्रह्मास्त्र विद्या, आठवीं महाविद्या भी कहा जाता है। देवी को पीली पोशाक पहनाकर पीला श्रृंगार भी किया जाता है। तांत्रिक लोग इस दिन विशेष साधना करते हैं। पीताम्बरा पीठ, दतिया मध्य प्रदेश में और हिमाचल के बगलामुखी मंदिर में बहुत बड़ा मेला लगता है। 20 से 24 मई ऊटी ग्रीष्म महोत्सव, नीलगिरी की ताजी हवा में प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच, यह गर्मी के त्यौहार की तरह है। यहां फूलों की सजावट, सब्ज़ियों की नक्काशी, फूलों की रंगोली, रोज़ शो, फ्रूट शो, स्पाइस शो, वेजिटेबल शो, बोट शो का आनन्द उठा सकते हैं। 22 मई को नरसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जयंती मनाई जायेगी। 23 मई को वैशाख पूर्णिमा, बुद्ध पूर्णिमा के दिन सारनाथ का भारतीय बौद्ध सर्किट का महत्वपूर्ण स्थल होने के नाते, यहां एक बड़े मेले का आयोजन किया जाता है। इस अवसर पर बड़ी संख्या में बौद्ध धर्मावलंबी पहुंचते हैं। इस क्रम में 24 मई को सृष्टि के प्रथम पत्रकार नारद जी की जयंती है। ऐसी मान्यता है कि नारद मुनि सभी देवों के प्रिय थे। नारद जी तीनों लोकों में देवी-देवताओं और असुरों के मध्य संवाद के सूत्रधार थे। इसलिए इस दिन को पत्रकार दिवस के रूप में मनाया जाता है। 28 मई को वीर सावरकर जयंती है। भारत के महान स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक, इतिहासकार और विचारक के रूप में राष्ट्र प्रथम ही उनका प्रथम और अंतिम ध्येय रहा है। इस तरह पूरे राष्ट्र में गर्मी की छुट्टियों में अपनों के साथ, अपनी संस्कृति, परंपरा, संतों और धर्म से जुड़े उत्सवों और समारोह में शामिल होकर इन विशिष्ट दिनों के हम सभी सहभागी बनकर राष्ट्र की जीवंतता की रक्षा करते हैं। ■

पूरे राष्ट्र में गर्मी की छुट्टियों में अपनों के साथ अपनी संस्कृति, परंपरा, साधु-संतों और धर्म से जुड़े उत्सवों एवं समारोह में शामिल होकर इन विशिष्ट दिनों के हम सभी सहभागी बनकर राष्ट्र की जीवंतता की रक्षा करते हैं।

वाइस एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी नये नौसेना प्रमुख

केंद्र सरकार ने वाइस एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी को नया नौसेना प्रमुख नियुक्त किया है। उन्होंने 30 अप्रैल को अपना कार्यभार संभाल लिया। इसके पूर्व वाइस एडमिरल त्रिपाठी नौसेना उप प्रमुख के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने नौसेना स्टाफ के मौजूदा प्रमुख पीवीएसएम, एवीएसएम, वीएसएम एडमिरल आर हरि कुमार का स्थान लिया। वाइस एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी का जन्म 15 मई, 1964 को हुआ था। उन्हें 1 जुलाई, 1985 को भारतीय नौसेना की कार्यकारी शाखा में नियुक्त किया गया था। वे संचार और इलेक्ट्रॉनिक युद्ध विशेषज्ञ हैं। नौसेना में उनकी लगभग 39 वर्षों की लंबी और विशिष्ट सेवा रही है। उन्होंने नौसेना उप प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने से पहले पश्चिमी नौसेना कमान के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ के रूप में कार्य किया है। वाइस एडमिरल डीके त्रिपाठी ने भारतीय नौसेना के पोतों विनाश, किर्च और त्रिशूल की कमान भी संभाली है। इसके अलावा उन्होंने विभिन्न महत्वपूर्ण परिचालन और स्टाफ नियुक्तियों पर भी कार्य किया है। इनमें पश्चिमी बेड़े के परिचालन अधिकारी, नौसेना परिचालन के निदेशक, नेटवर्क केंद्रीय परिचालनों के प्रधान निदेशक और नई दिल्ली में नौसेना योजना के प्रधान निदेशक के पद शामिल हैं। सैनिक स्कूल- रीवा और राष्ट्रीय रक्षा अकादमी- खड़कवासला के पूर्व छात्र वाइस एडमिरल दिनेश कुमार त्रिपाठी ने वेलिंगटन स्थित डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज, नेवल हायर कमांड- करंज और यूनाइटेड स्टेट्स नेवल वॉर कॉलेज- अमेरिका स्थित नेवल कमांड कॉलेज के विभिन्न पाठ्यक्रमों को पूरा किया है। ■

सोनार प्रणालियों के लिए एक परीक्षण और मूल्यांकन केंद्र का उद्घाटन

रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए अवसंरचनात्मक विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी क्रम में केरल में इडुक्की के कुलमावु में अंडरवाटर एकॉस्टिकरिसर्च फैसिलिटी में ध्वनिक विशेषता एवं मूल्यांकन के लिए एक अत्याधुनिक सबमर्सिबल प्लेटफॉर्म (स्पेस) का उद्घाटन हुआ। डीआरडीओ की नौसेना भौतिक और महासागरीय प्रयोगशाला द्वारा स्थापित स्पेस को जहाजों, पनडुब्बियों और हेलीकॉप्टरों सहित विभिन्न प्लेटफार्मों पर भारतीय नौसेना के लिए निर्धारित सोनार प्रणालियों के लिए एक प्रमुख परीक्षण और मूल्यांकन केंद्र के रूप में इसे डिजाइन किया गया है। इस स्पेस का उपयोग मुख्य रूप से संपूर्ण सोनार प्रणाली के मूल्यांकन के लिए किया जाएगा, जिससे सेंसर और ट्रांसड्यूसर जैसे वैज्ञानिक पैकेजों की त्वरित तैनाती और आसान रिकवरी उपलब्ध होगी। यह आधुनिक और अच्छी तरह से सुसज्जित वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में डेटा प्रोसेसिंग और नमूना विश्लेषण की जरूरतों को पूरा करने के साथ-साथ पनडुब्बी रोधी युद्ध अनुसंधान क्षमताओं के एक नए युग की भी शुरुआत करेगा। ■

रामलला के सूर्य तिलक में योगदान

इस बार अयोध्या में रामलला के मंदिर में रामनवमी का उत्सव भव्य और ऐतिहासिक रहा। इस दिव्य उत्सव में राम लला के मस्तक पर सूर्य तिलक काफी चर्चा का विषय रहा। बता दें कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग के अंतर्गत एक स्वायत्त निकाय, भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आईआईए) ने अयोध्या में सूर्य तिलक परियोजना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। सूर्य तिलक परियोजना के अंतर्गत चैत्र मास में राम नवमी के अवसर पर 17 अप्रैल को दोपहर 12 बजे श्री रामलला के मस्तक पर सूर्य की रोशनी डाली गई। भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आईआईए) की टीम ने सूर्य की स्थिति, प्रकाशीय प्रणाली के डिजाइन व अनुकूलन की गणना की और साइट पर सन लाईट का एकीकरण किया। इन दिनों आकाश में सूर्य की स्थिति की गणना के लिए खगोल विज्ञान में विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। आईआईए टीम के लोगों ने मंदिर के शीर्ष से मूर्ति के ललाट के ऊपरी हिस्से तक सूरज की किरण को पहुंचाने के लिए लगभग 6 मिनट तक मूर्ति पर दर्पण और लेंस का अच्छी तरीके से समायोजन किया। साथ ही आकाश में सूर्य की अवस्थिति के अनुसार पहले दर्पण की स्थिति को बदलने के लिए मैनुअल तंत्र एक ऑप्टो-मैकेनिकल सिस्टम का अनुमान के बारे में भी डिजाइन तैयार करने के कार्य का नेतृत्व भी किया। इस पूरी प्रक्रिया में 4 दर्पणों और 2 लेंसों का प्रयोग हुआ। इस तरह यंत्र का निर्माण ऑप्टिका, बैंगलोर द्वारा किया गया है और साइट पर ऑप्टो-मैकेनिकल सिस्टम का कार्यान्वयन सीएसआईआर-सीबीआरआई द्वारा किया गया। ■

1. सृष्टि का प्रथम पत्रकार किसे माना जाता है?

(A) ब्रह्मा जी (B) हनुमान जी

(C) देवर्षि नारद (D) श्री रामानन्दाचार्य

2. शाक्यमुनि किसे कहा जाता है?

(A) गौतम बुद्ध (B) महावीर स्वामी

(C) स्वामी वल्लभाचार्य (D) चैतन्य महाप्रभु

3. नाग लीला किस कवि की रचना है?

(A) जयशंकर प्रसाद (B) प्रताप नारायण

(C) कबीरदास (D) सूरदास

4. समिधा का संबंध किससे है?

(A) रंगोली (B) गायन

(C) हवन (D) प्रतियोगिता

5. गायत्री मन्त्र सर्वप्रथम किस वेद में उद्धृत हुआ है?

(A) अष्टाध्यायी (B) संहिता

(C) स्मृति (D) ऋग्वेद

6. वत्स महाजनपद की राजधानी क्या थी ?

(A) वैशाली (B) चंपा

(C) कौशाम्बी (D) श्रावस्ती

7. कौटिल्य के विचार किस पुस्तक में हैं?

(A) अर्थशास्त्र (B) मन की लहर

(C) तारापात पचीसी (D) संगीत शाकुंतलम्

8. हिन्दी माह में दूसरे क्रम पर है।

(A) वैशाख (B) जेष्ठ

(C) आषाढ़ (D) श्रावण

9. ऋतुओं की संख्या कितनी है?

(A) 4 (B) 5

(C) 6 (D) 7

10. पृथ्वी की पर्यायवाची है।

(A) भारती (B) महि

(C) महाश्वेता (D) अभ्रं

उत्तर

1. (C), 2.(A), 3.(D), 4.(C), 5.(D), 6.(C), 7.(A), 8. (A) , 9. (C), 10. (B)

हर दिन पावन

तिथि	विवरण
1 मई, 1930	बंसीलाल सोनी जयंती, संघ कार्यकर्ता
2 मई, 1985	रामनरेश सिंह पुण्यतिथि (आधुनिक विश्वकर्मा)
4 मई, 1919	हरिभाऊ वाकणकर जयंती (भीमबेटका गुफा चित्रों के अन्वेषक)
5 मई, 1933	विष्णु कुमार जयंती (सेवा के धाम)
6 मई, 1955	राधेश्याम जी जयंती, सेवाप्रिय
7 मई, 1861	रवीन्द्रनाथ टैगोर जयंती (विश्वकवि, संगीतकार, दार्शनिक)
8 मई, 1916	स्वामी चिन्मयानंद जयंती, वेदांत दर्शन के मर्मज्ञ
9 मई, 1864	आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जयंती (हिन्दी के प्रथम आचार्य)
10 मई,1857	स्वाधीनता संग्राम स्मृति दिवस
11 मई,1915	अवधबिहारी बलिदान दिवस, स्वतंत्रता सेनानी
13 मई,1937	सोन्या मारुति सत्याग्रह और डा. हेडगेवार इतिहास स्मृति दिवस
14 मई, 2007	भैया जी सहस्रबुद्धे पुण्यतिथि, संघ कार्यकर्ता, उत्कृष्ट लेखक
15 मई, 1907	क्रांतिवीर सुखदेव जयंती, महान स्वतंत्रता सेनानी
16 मई, 1977	गोविन्दराव कात्रे पुण्यतिथि, कर्मयोगी
17 मई, 1893	एफ.एस.ग्राउस पुण्यतिथि (रामचरितमानस के अंग्रेजी अनुवादक)
18 मई, 1911	नरेन्द्र जीत सिंह जयंती, संघ कार्यकर्ता
19 मई, 1917	कुशक बकुला रिम्पोछे जयंती (आधुनिक लद्दाख के निर्माता)
20 मई, 1932	विपिन चन्द्र पाल पुण्यतिथि, स्वतंत्रता सेनानी, स्वदेशी आन्दोलन के प्रवर्तक
21 मई, 1920	राजाभाऊ सावरगांवकर जयंती, प्रेरणा स्तंभ
22 मई, 1665	मुरारबाजी बलिदान दिवस, अमर बलिदानी
23 मई, 1858	कालपी का संघर्ष, इतिहास-स्मृति दिवस
24 मई, 1928	के.जना कृष्णमूर्ति जयंती, समर्पण और निष्ठा के प्रतिरूप
25 मई, 1886	रासबिहारी बोस जयंती, अमर क्रान्तिकारी
26 मई, 1922	आनंद शंकर पंड्या जयंती, हिन्दू चेतना के प्रचार पुरुष
27 मई, 1918	प्रताप सिंह बारहठ बलिदान दिवस, क्रांतिकारी
28 मई, 1883	विनायक दामोदर सावरकर जयंती, क्रांतिकारियों के सिरमौर
29 मई,1939	नन्हू सिंह बलिदान दिवस (हैदराबाद सत्याग्रह के बलिदानी)
30 मई, 1606	गुरु अर्जुनदेव का बलिदान दिवस (सिख धर्म के पांचवे गुरु)
31 मई, 1725	राजमाता अहल्याबाई होल्कर जयंती, तपस्वी

मेरा वोट मेरा कर्तव्य

हम वोट जरूर डालेंगे

लोकतंत्र के महापर्व में मताधिकार का प्रयोग कर देश के भाग्य विधाता बनें। आपके एक वोट से भारत की एकता, अखंडता एवं संस्कृति और मजबूत होगी।

स्वस्थ लोकतंत्र की पहचान।
वोटिंग कर दिखाएं निशान।।

-प्रेरणा विचार पत्रिका

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

MADHUSUDAN SMC

NIRALA WORLD

NIRALA ESTATE
PHASE II

NIRALA INFRATECH PRIVATE LIMITED

Corp. Office : H-61, 1st Floor, Sec-63, Noida (U.P.) 201301 | Site Office : GH-04 Techzone-IV, Gr. Noida (West), U.P.

For Sales enquiries : 9212131476

Tel.: 0120-4823000, Fax : 0120 4823001, Email : sales@niralaworld.com, Web.: www.niralaworld.com